हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

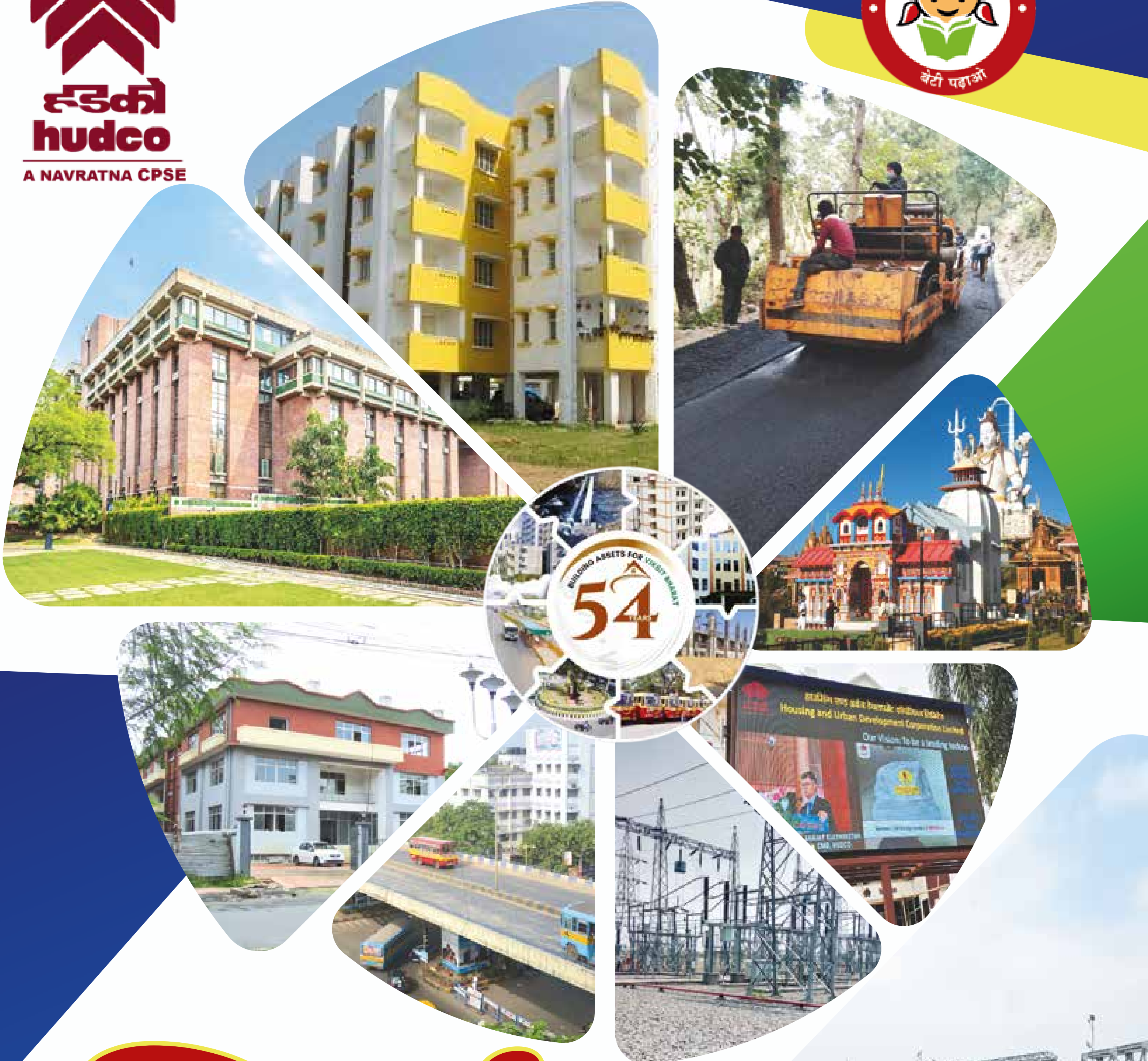

चिरई

हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता
की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष : 2024-25, अंक-4

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(नवरत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, हडको भवन
ब्लॉक-डीजे, प्लॉट नंबर 11, सेक्टर-II, करुणामयी, साल्ट लेक, कोलकाता-700091

पश्चिम बंगाल सरकार के शीर्ष अधिकारियों एवं हडको मुख्यालय के अधिकारियों, श्रीमती बीना फिलपोज, कार्यकारी निदेशक (परियोजना) एवं श्री के के अजीत, महाप्रबंधक (परियोजना) के साथ वावसाय सृजन बैठक।

हडको निदेशक मंडली के सदस्य

श्री संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री एम नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

श्री दलजीत सिंह खत्री
निदेशक (वित्त)

श्री संजीत (आईआरएएस)
निदेशक
हडको एवं जेएस एंड एफए

श्री सोलोमन अरोकियाराज
(आईएएस)
निदेशक हडको और जेएस

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

संपादक मंडली

मुख्य संरक्षक

श्रीमती राधा रॉय
कार्यकारी निदेशक (परियोजना/राजभाषा)
हडको, कॉर्पोरेट कार्यालय

संरक्षक

श्री देबेश चक्रवर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी),
हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय

परामर्शदाता

श्रीमती देबजानी मोहरार, वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)
श्रीमती इशिता मंडल, वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)

संपादक मण्डली

श्री जयंत भट्टाचार्य, वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)-
सह-हिंदी नोडल अधिकारी
श्री वरुण कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)
श्री स्वरुप दास, प्रबंधक (आईटी)
सह-हिंदी नोडल अधिकारी

सहयोग

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के
समस्त सहकर्मी एवं परिवार-गण

प्रकाशक सम्पर्क

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, हडको भवन
प्लॉट संख्या-11, ब्लॉक-डीजे, प्लॉट नंबर 11, सेक्टर-II, करुणामयी, साल्ट लेक, कोलकाता-700091
दूरभाष : 033 2358 6141/7734/5514 ईमेल : kro@hudco.org

अनुक्रमणिका

क्र		शीर्षक		पृष्ठ
1	संदेश	संजय कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक		5
2		एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)		6
3		दलजीत सिंह खत्री, निदेशक (वित्त)		7
4		विनीत गुप्ता, प्रमुख सतर्कता अधिकारी		8
5		देबेश चक्रबर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)		9
6		डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन)		10
7		राजेश साव, सदस्य सह सचिव, नराकास (उपक्रम) व प्रबंधक (राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड, मुख्यालय कोलकाता		11
8		जयंत भट्टाचार्य, वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी) हिंदी नोडल अधिकारी एवं स्वरूप दास, प्रबंधक (आईटी), हिंदी नोडल सहायक		12
9	कहानी, आलेख, काव्यांजली, अन्य रचनाएँ व हडको की विविध गतिविधियां	पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलकियाँ		13
10		कोलकाता क्षेत्र में हडको का परिचालन : पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम	देबेस चक्रवर्ती	14
11		भाषाओं की दूरियाँ मिटा रहा आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस	जयंत भट्टाचार्य	16
12		मन की दशा (काव्य)	शमीक बोस	17
13		योजना सृजन		18
14		DVC ने जलविद्युत परियोजनाओं के लिए HUDCO के साथ वित्तीय साझेदारी की घोषणा की		19
15		राम धारी सिंह दिनकर	देबजनी मोहरार	20
16		भ्रष्टाचार को कम करने में विजिलेंस और ई-गवर्नेंस की भूमिका	वरुण कुमार सिंह	22
17		78वां स्वतंत्रता दिवस : क्या महिलाएं वास्तव में स्वतंत्र है?	ईशिता मंडल	23
18		भगवान जगन्नाथ, एकता और भक्ति के शाश्वत प्रतीक	द्रुपद कुमार पुष्टि	24
19		स्थापना दिवस समारोह		25
20		वित्तीय क्षेत्र में सत्यनिष्ठा की अहमियत	राजेंद्र कुमार बेहरा	26
21		जीते जी (काव्य)	स्वपन चन्द्र पॉल	29
22		तुम कहाँ (काव्य)	नवनीता पाल	29
23		जब मैं कश्मीर से मिला : जन्नत की यात्रा	स्वरूप दास	30
24		मेरा सफरनामा	ओम प्रकाश	32
25		साइबर आक्रमण (साइबर अटैक)	अर्चिता दत्ता	34
26		1 मार्च 2025 को नलबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन		37
27		भारत में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML)	चिरंजीब कर्मकार	38
28		खेलो इंडिया खेलो (काव्य)	संदीप घोष	39
29		प्लास्टिक प्रदूषण	ऋषभ चक्रबर्ती	40
30		एक नया सफ़र (काव्य)	कुमारी मानसी सिंह	41
31		क्या होते है – हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन? वे कैसे करते हैं काम?	मौर्य मोहरार	42
32		गणतन्त्र दिवस की झलकियाँ		43
33		स्वामी विवेकानंद	अंजना भट्टाचार्य	44
34		आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस हमारी दुनिया को कैसे बदल देगी	जयंजन भट्टाचार्य	46
35		पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलकियाँ		48
36		दिनांक : 8 मार्च, 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन		50
37		योग दिवस		52
38		हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में 14/09/2024 से 29/09/2024 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाए जाने के संबंध में रिपोर्ट		56
39		स्वच्छता अभियान		59
40		सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन		62
41		आईपीजीएमईआर, कोलकाता में चिकित्सा उपकरणों की खरीद और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए हडको सीएसआर सहायता		66
42		हडको सीएसआर सहायता से कोलकाता और आसपास के जिले के विभिन्न सरकारी स्कूलों में यूवी निस्पन्दन फिल्टर कूलर की स्थापना		69
43		कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख / कार्यकारी निदेशक जिन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है		70
44		कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में इस वर्ष के दौरान, हमारे सेवानिवृत्त कर्मठ अधिकारीगण		71
45		कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में इस वर्ष के दौरान जन्मदिन मनाया गया		71

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता अपनी गृह पत्रिका "चिरई" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाएं समकालीन विचारणीय विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं होती, वरन भावी प्रगति की पूर्वपीठिका का कार्य भी करती हैं।

राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ-साथ कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम राज्य के विकास में कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम से अहम भूमिका निभाते हुए पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम राज्य के विकास में भी अपना अनुपम योगदान दे रहा है।

इस विशेषांक के माध्यम से हम उन सभी महिलाओं को सम्मानित करना चाहते है जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त की है और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया है। हमें विश्वास है कि उनके अनुभव और कहानियां आप सभी को प्रेरित करेंगे।

मैं "चिरई" के चतुर्थ अंक के सभी रचनाकारों, पत्रिका के संपादन समिति के सदस्यों तथा इसके प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों और कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों को इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ एवं "चिरई" के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।" - राहुल सांकृत्यायन

निदेशक कॉर्पोरेट (प्लानिंग) का संदेश

प्रिय साथियों,

यह गौरव की बात है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा अपनी गृह पत्रिका "चिरई" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हमें संविधान का सम्मान करना चाहिए तथा अपने काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।

हिंदी गृह-पत्रिकाएं कार्मिकों की अभिव्यक्तियों व उनके हिंदी उपयोग को दूसरों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे हिंदी को आत्मीय भाव से अपनाने में राष्ट्र प्रेम का भाव जागृत होता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालयों में किए जा रहे अनेक प्रयासों में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का प्रकाशन सराहनीय है।

आशा है कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोगी सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित।

एम. नागराज

निदेशक कॉर्पोरेट (प्लानिंग)

"जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।" - (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

निदेशक (वित्त) का संदेश

प्रिय साथियों,

सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और उसे समृद्ध करने के उद्देश्य से हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने राजभाषा गृह पत्रिका "चिरई" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हमें सदैव सृजनात्मक कार्य करते रहना चाहिए ताकि जीवन ऊर्जामय एवं आनंदमय बना रहे। आशा करता हूँ कि गृह-पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी का प्रसार एवं प्रभाव दोनों ही बढ़ेंगे। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय एवं संपादक मदनल इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

दलजीत

दलजीत सिंह खत्री
निदेशक (वित्त)

"समाज और राष्ट्र की भावनाओं को परिमार्जित करने वाला साहित्य ही सच्चा साहित्य है।" - जनार्दनप्रसाद झा द्विज

प्रमुख सतर्कता अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की हिन्दी गृह पत्रिका "चिरई" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना सराहनीय कार्य है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ती है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

विनीत गुप्ता
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

"हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है।" - (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह

hudco
A NAVRATNA CPSE

क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) का संदेश

यह परम हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है।

राजभाषा से संबंधित सभी कार्यों में कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय को मार्गदर्शन करने के लिए सामान्य रूप से एवं हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने में सहायता के लिए विशेष रूप से मैं हडको के हिंदी राजभाषा विभाग के आभारी हूँ।

मैं सभी स्टाफ सदस्यों का भी आभार व्यक्त करता हूं उनके लेख आदि के माध्यम से पर्याप्त योगदान हेतु। हिंदी पत्रिका "चिरई" का नियमित रूप से प्रकाशित करने में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के हिंदी नोडल अधिकारी एवं हिंदी नोडल सहायक का महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तब्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्य भी है। हिंदी भाषा की प्रचार प्रसार में भारत सरकार के उद्देश्य को सफल करने के उपरांत हमें हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने का अवसर देने के लिए हम हडको प्रबंधन के आभारी हैं।

मैं उन लोगों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने पूरे दिल से पहल की एवं इस हिंदी पत्रिका को प्रकाशित करने में योगदान दिया।

देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

"वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके।" - पीर मुहम्मद मूनिस

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र),
-- x --

234/4, ए.जे.सी. बोस रोड,
निजाम पैलेस, कोलकाता-20

संख्या- 24/2/2015-क्षे.का.का.(कोल)/1206

दिनांक- 26.2.2025

संदेश

यह अत्यंत गर्व का विषय है कि हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन की दृष्टि से अपनी हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं हिंदी भाषा के प्रचार- प्रसार की दिशा में नि:संदेह यह एक सराहनीय प्रयास है। सृजनात्मकता के दृष्टिकोण से हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सभी कार्मिक एवं संपादक मंडल इस उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता भविष्य में भी राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में इस प्रकार के सकारात्मक प्रयासों के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ. विचित्रसेन गुप्त)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

"भारतेंदु और द्विवेदी ने हिंदी की जड़ पाताल तक पहुँचा दी है; उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा।" - शिवपूजन सहाय

सदस्य सह सचिव, नराकास (उपक्रम) का संदेश

हमें यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा हिंदी गृह पत्रिका (वर्ष : 2024-25, अंक-4) का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और समसामयिक विषयों को समाहित करते हुए एक सशक्त मंच प्रदान कर रही है।

पत्रिका में राजभाषा हिंदी, प्रशासनिक कार्यों, तकनीकी नवाचारों, सामाजिक सरोकारों, साहित्य, संस्कृति, खेल-कूद, स्वच्छता अभियान, सतर्कता जागरूकता और महिला सशक्तिकरण से जुड़े महत्वपूर्ण आलेख और रचनाएँ सम्मिलित हैं। विशेष रूप से, इसमें हडको द्वारा पश्चिम बंगाल और सिक्किम में वित्तपोषित योजनाओं की झलकियाँ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग पर शोधपूर्ण आलेख, सरकारी कार्यों में हिंदी की भूमिका, विजिलेंस और ई-गवर्नेंस की महत्ता, पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक प्रदूषण, स्वच्छता अभियान, खेल और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, पत्रिका में महापुरुषों के जीवन दर्शन, काव्य रचनाएँ और अनुभवी लेखकों के प्रेरणादायक यात्रा-वृत्तांत भी सम्मिलित हैं, जो इसे और अधिक रोचक तथा पठनीय बनाते हैं।

यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन न होकर हिंदी भाषा के संवर्धन एवं कार्यालयीन कार्यों में इसके व्यापक उपयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह निस्संदेह हिंदी प्रेमियों, कर्मचारियों और पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी। मैं इस सारगर्भित और उत्कृष्ट प्रयास के लिए हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय की पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार अपनी ज्ञानवर्धक यात्रा को आगे बढ़ाती रहेगी।

राजेश साव

सदस्य सह सचिव, नराकास (उपक्रम), कोलकाता
व प्रबंधक (राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड, मुख्यालय कोलकाता

हिंदी नोडल अधिकारी एवं नोडल सहायक की कलम से

लक्ष्य प्राप्ति एक विशिष्ट, वांछनीय लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया है। लक्ष्य प्राप्ति के मुख्य घटक योजना, प्रयास एवं निष्पादन हैं। योजना में एक स्पष्ट दृष्टि बनाना शामिल है कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं एवं एक योजना विकसित करना चाहते हैं। उपाय में आपके सपने को साकार करने के लिए आवश्यक कार्य करना शामिल है। निष्पादन में आपका लक्ष्य लेना, उसे क्रिया में बदलना और अपनी प्रगति की निगरानी करना शामिल है।

हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि कड़ी मेहनत, समर्पण, लगन, प्रतिबद्धता के बाद, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता अपना वांछित लक्ष्य तक पहुंच पाया है यानी हिंदी पत्राचार में न केवल 80% के लक्ष्य को पार कर लिया है बल्कि पिछले तीन तिमाही में 84% तक पहुंच गया है। यह हमारे क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) श्री देवेश चक्रवर्ती की दृढ़ प्रतिबद्धता, समर्थन और प्रोत्साहन के कारण हो पाया। उनके मार्गदर्शन ने हमें लक्ष्य प्राप्ति की चुनौती का सामना करने का साहस दिया।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि अपने पिछले अनुभव, मार्गदर्शन और शुभचिंतकों के प्रोत्साहन के साथ, हम कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। अपनी पत्रिका की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए, हमने बहुत प्रयास की है। यह हमारे सहयोगियों के सामूहिक समर्थन से हुआ है।

मुझे आशा है कि सम्मानित वरिष्ठ अधिकारी, सहकर्मी, पाठक के सहयोग से हम आगे भी एक उत्पादक, चुनौतीपूर्ण और सफल प्रकाशन कर पाएंगे। निरंतर सुधार की भावना में, हमारे अगले प्रकाशन को सुव्यवस्थित और गुणवत्ता-उन्मुख बनाने के लिए किसी भी रचनात्मक निवेश का अत्यधिक स्वागत है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की ओर से, हम सभी लेखकों, संरक्षकों एवं पाठकों को शुभकामनाएं देना चाहेंगे।

जयंत भट्टाचार्य
जयंत भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
हिंदी नोडल अधिकारी

स्वरुप दास
स्वरुप दास
प्रबंधक (आईटी)
हिंदी नोडल सहायक

"उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।" - शारदाचरण मित्र

पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलकियाँ

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" - राजेंद्रप्रसाद

कोलकाता क्षेत्र में हडको का परिचालन : पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम

देबेश चक्रवर्ती

क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हडको) हमारे देश में एक प्रमुख तकनीकी-वित्तपोषण सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम, हमेशा से विभिन्न बुनियादी ढांचे एवं आवास परियोजनाओं के विकास के लिए राज्य सरकारों और उसकी एजेंसियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने में सबसे आगे रहा है। लोगों के जीवन को बदलने के लिए एक अग्रणी तकनीकी-वित्तपोषण संस्थान होने के अपने कॉर्पोरेट विज़न के साथ, हडको जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सतत आवास विकास को बढ़ावा देने के मिशन पर है। हडको को 2002 में अनुसूची-ए पीएसई में अपग्रेड किया गया था और 2024 में, इसे नवरत्न का दर्जा दिया गया एवं आरबीआई के साथ एनबीएफसी-आईएफसी के रूप में पंजीकृत किया गया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, हडको के ऋण स्वीकृत 77,386.55 करोड़ रुपये और ऋण वितरण 17,987.03 करोड़ रुपये रहा।

संचालन:

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने 1984 में अपना संचालन पश्चिम बंगाल में प्रारंभ किया। वर्तमान में, यह सिक्किम और पश्चिम बंगाल में हडको के संचालन का प्रबंधन कर रहा है। स्थापना के बाद से, हडको ने सिक्किम राज्य में 15904 आवासीय इकाइयों और चार बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण के लिए 1188 करोड़ रुपये की ऋण राशि के साथ 42 योजनाओं को मंजूरी दी है। प्रमुख उधार लेने वाली एजेंसियां सिक्किम हाउसिंग एंड डेवलपमेंट बोर्ड और सिक्किम इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड हैं।

पश्चिम बंगाल में, हडको द्वारा 3215238 आवासीय इकाइयों और 51 बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण के लिए 4461 करोड़ रुपये की ऋण राशि के लिए 342 परियोजनाओं को वित्तपोषित किया गया है। राज्य में प्रमुख उधार लेने वाली एजेंसियां पश्चिम बंगाल हाउसिंग बोर्ड, कोलकाता मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी, कोलकाता नगर निगम और अन्य शहरी स्थानीय निकाय, राज्य शहरी विकास एजेंसी और राज्य सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियां जैसे WBSEDCL, WBPDCL, WBSETCL हैं।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, हडको ने वेस्ट बंगाल पावर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डब्ल्यूबीपीडीसीएल), वेस्ट बंगाल स्टेट इलेक्ट्रिसिटी ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड (डब्ल्यूबीएसईटीसीएल) एवं वेस्ट बंगाल स्टेट इलेक्ट्रिसिटी डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड (डब्ल्यूबीएसईडीसीएल) को 913.57 करोड़ रुपये और वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) को 192.76 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं, जिनमें से 321 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं।

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। - मैथिलीशरण गुप्त

कन्सलटेन्सी:

सिक्किम में परामर्श योजनाओं के तहत हडको द्वारा शुरू की गई कुछ प्रमुख परियोजनाएं, नामची में तीर्थ-सह-सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण, सिंगटाम में भूकंप पीड़ितों का पुनर्वास और हडकोक शहर के लिए आरएवाई के तहत झुग्गी मुक्त शहर योजना की तैयारी हैं। पश्चिम बंगाल में, जलपाईगुड़ी में किफायती आवास की योजना, डिजाइन, आकलन और तैयारी और पश्चिम बंगाल के जयगांव शहर के लिए भूमि उपयोग एवं विकास नियंत्रण योजना (एलयूडीसीपी) की तैयारी परियोजनाएं हैं। हाल ही में, केएमडीए द्वारा आमंत्रित ईओआई के अनुसार बिधाननगर एमसी एवं नवदिगंत औद्योगिक टाउनशिप प्राधिकरण के एलयूडीसीपी एवं एलयूएमआर की तैयारी का प्रस्ताव मुख्यालय द्वारा अनुमोदित किया गया है जिसका अनुमानित शुल्क जीएसटी को छोड़कर 58.00 लाख रुपये हैं।

सीएसआर परियोजनाएं:

सिक्किम और पश्चिम बंगाल राज्य के लिए हडको सीएसआर सहायता 5.92 करोड़ रुपये प्रदान की गई। प्रमुख योजनाओं में सिंगताम में आपदा पुनर्वास कार्य, तिब्बत रोड, हडकोक में मोची शेड और शौचालय परिसर का निर्माण, सिक्किम के नामची में सिद्धेश्वर धाम (चारधाम) परिसर का जीर्णोद्धार, नवीनीकरण एवं संचालन और रखरखाव शामिल हैं। पश्चिम बंगाल में प्रमुख योजनाओं में कोलकाता के विभिन्न स्थानों पर नाइट शेल्टर, कोलकाता के देशप्रियो पार्क में एवं उसके आसपास सौर आधारित प्रकाश व्यवस्था की आपूर्ति एवं स्थापना शामिल है। हाल के दिनों में पश्चिम बंगाल में अपनी सीएसआर पहलों के तहत हडको ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, सरकार को 86.05 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी है। पश्चिम बंगाल सरकार को आईपीजीएमईआर में चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए 99.99 लाख रुपये एवं सीएनसीआई (चितरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान) कोलकाता को 99.99 लाख रुपये दिए गए हैं, जिससे 2023-24 के दौरान ईबीयूएस (एंडोब्रोंकियल अल्ट्रासाउंड) प्रणाली की खरीद की सुविधा मिलेगी। सिक्किम में, हडकोक नगर निगम (जीएमसी) को 2024-25 के दौरान हडकोक शहर के 19 वार्डों में एसडब्ल्यूएम जागरूकता बढ़ाने एवं डोर-टू-डोर कचरा संग्रह के लिए 4 कचरा ट्रकों की खरीद के लिए 119.39 लाख रुपये दिए गए हैं।

सीएसआर कार्यक्रम:

- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2024 के उद्देश्य से हडको द्वारा 2.00 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई थी। इस संबंध में, हडको सीएसआर पहल के तहत विधाननगर नगर निगम के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह के एक भाग के रूप में विधाननगर नगर निगम स्कूल, साल्ट लेक में छात्रों के लिए योग सत्र आयोजित किया गया।
- हडको ने पश्चिम बंगाल के 11 स्कूलों को वाटर कूलर प्रदान हेतु 10.00 लाख रुपये अनुमोदन किए। स्कूल शिक्षा विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के द्वारा इस कार्यालय को 11 सरकारी स्कूलों की सूची प्रदान की गई। सभी 11 कूलरों की डिलीवरी GeM के माध्यम से पूरी हो गई है एवं स्थापना कार्य भी पूरा हो गया है।
- हडको ने पश्चिम बंगाल राज्य के लिए 25.00 लाख रुपये एवं सिक्किम राज्य के लिए 15.00 लाख रुपये मंजूर किए हैं, ताकि विभिन्न सरकारी/सरकारी प्रायोजित स्कूलों को फर्नीचर (बेंच, ब्लैक बोर्ड, सीलिंग फैन, एलईडी लाइट, कुर्सी, टेबल आदि)/जिम उपकरण उपलब्ध कराए जा सकें, जो ज्यादातर ग्रामीण/पिछड़े इलाकों में हैं। संबंधित राज्यों के स्कूल शिक्षा विभाग से स्कूलों की सूची पहले ही प्राप्त कर ली गई है। फर्नीचर/योग उपकरणों की खरीद GeM के माध्यम से की गई है एवं स्थापना कार्य पूरा हो चुका है।

प्रधानमंत्री आवास योजना:

पीएमएवाई- यू-02: पीएमएवाई- शहरी 2.0 के लिए योजना भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एवं मंत्रालय द्वारा दिशा-निर्देश परिचालित किए गए हैं। हडको पश्चिम बंगाल और सिक्किम सरकार को ऋण/सब्सिडी सहायता प्रदान करने में सहायता करेगा एवं भारत सरकार के निर्देशानुसार डीपीआर/साइट जांच करेगा।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल राज्य सरकार और विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ नियमित रूप से संपर्क में है ताकि राज्य के विकास के लिए हडको सहायता प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाई जा सकें। हडको अखिल भारतीय स्तर पर 2027 के भीतर 1.80 लाख करोड़ रुपये तक का बकाया ऋण प्राप्त करने और 2047 तक विकसित भारत बनाने की दिशा में तेजी से प्रगति करने के लिए तैयार है।

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती। - डॉ. मुकुन्दस्वरुप वर्मा

जयंत भट्टाचार्य

वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

भाषाओं की दूरियाँ मिटा रहा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (**AI**) आज जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस दुनिया का कायाकल्प करने वाली है। इस बदलाव से हमारी हिंदी भाषा भी अछूता नहीं रह सकती है। जो भाषा बदलते युग के साथ ताल-मेल बैठा कर नहीं चल सकती, उसका अस्तित्व आगे चलकर खतरे में या सकता है। और धीरे-धीरे वो अपनी प्रासंगिकता खो देती है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की सकारात्मक और नकारात्मक दोनों संभावनाएं हैं। अगर हम आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस को सकारात्मक तरीके से इस्तेमाल करें। और जिम्मेदारी के साथ इस्तेमाल करें तो यह मानव सभ्यता कि प्रगति का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है। हमारे मन में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि हिंदी भाषा के लिए आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की क्या प्रसंगिता है? ओर यह हिंदी भाषा को किस तरह भविष्य में प्रभावित कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है, जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की तरह सीख सकती है व विशाल स्तर पर आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस चीजों पर निगरानी रख सकती है, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों पर मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती हैं और साथ ही साथ परिणाम भी दे सकती है।

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) हिंदी की स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। अभी हाल ही में यूनेसकों की एक रिपोर्ट में आया या कि दुनिया की 7520 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी कि विलुप्त होने से बचाना चाहते हैं तो हमें आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का स्वागत खुले दिल से करना होगा। क्यों कि आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच की दूरियों को समाप्त करने में काफी हद तक सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त है। हर क्षेत्र में अंग्रेजी सर्वव्याप्त है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकी अंग्रेजी के इस दब-दबे से मुक्त होने से काफी हद तक हमारी मदद कर सकती है, क्यों कि प्रौद्योगिकी के उपयोग से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद इतना सटीक, सहल, सरल और

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।" - देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

सार्वजनिक हो सकता है कि आप अंग्रेजी कि सामग्री को हिंदी में आसानी से पढ़ सकेंगे और हिंदी कि सामग्री को अंग्रेजी में। जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए ऐसा लगता है कि अगले एक-दो दशकों में हम भाषा-निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएं बोलने-लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो।

भारत के प्रधानमंत्री, माननीय नरेंद्र मोदी जी ने हाल ही में अपने अभिभाषण में (G-20 शिखर सम्मेलन) कहा था कि भारत दुनिया में आर्टिफ़िशियल थल इंटेलि`जेंस का केंद्र (ग्लोबल हब ऑफ आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस) बनाने की क्षमता रखता है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस ने उनके भाषणों और संबोधनों को विभिन्न भाषणों में अनुवाद करने में मदद की। माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स से बात करते हुए प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी ने कहा था कि आज कि दुनिया में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस कि यहां भूमिका व अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दूसरा बड़ा प्रभाव होगा अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों का विकास होना। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुब्रमवयं भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जेशनकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत श्रीभगवत गीता, वेद पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद-योग जैसी ज्ञान संपदा, हमारा पत्रकारिता और विश्व-विद्यालयों के शोध आदि दुनिया भर में गैर-हिंदी पाठकों तक आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की मदद से पहुँच सकते हैं। यह हमारी साहित्यिक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शौक्षणीक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाने में योगदान दे सकता है। हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान हो जाएगा। आज सरकार के निर्देश पर हिंदी में पाठ्य-सामग्री तैयार करने के लिए आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग भी होने लगा है। अंग्रेजी फ्रेंच व जर्मनी की किताबों को स्कैन करके चंद मिनटों में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। हम हिंदी में जिन विषयों में अच्छी सामग्री कि कमी से परेशान रहे हैं कल्पना कीजिए कि अगर उन विषयों में अचानक ही दर्जनों व सैकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हो जाएं तो वैश्विक स्तर पर विकास का रास्ता कितना सरल हो जाएगा और यह सब संभव हो सकता है तो सिर्फ आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से हो सकता है। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषा कि सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएं दे सकेंगे।

अगर हम ठोस तकनीकी प्रवीणता की ओर बढ़ते है तो आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस हमें अब तक की सीमाओं, वैश्विक व भाषायी असमानताओं आदि से मुक्त होकर विकास कि नयी दौड़ में आगे बढ़ने में मौका दे सकती है।

मन की दशा

पन्नों पर बिखरती, मन की वेदना
अन्तः को स्थिर करती है।
किन्तु किसी की शीट प्रतिक्रिया
हृदय को उद्विग्न करती है।
कुछ क्षण अपराध बोध होता है
स्वार्थी (एकतरफा) अभिव्यक्ति का भान होता है।
झाँकती हूँ, टटोलती हूँ और पाती हूँ
मनोद्वेग मेरे तो शब्दों का आश्रय पाते हैं
किन्तु किसी के तो हृदय में ही दबे रह जाते हैं।
प्रवाह न बन पाये भाव तो
अवसाद जमने लगता है।
ना जाने वो खुद को कैसे संभाल रखता हैं।
मन की गति क्यों ऐसी होती हैं।
किसी की अनदेखी खलती है
तो चुप्पी हृदय झंझोरती हैं।

शमीक बोस
संयुक्त महाप्रबंधक (अर्थ)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

"हिंदी भाषा को भारतीय जनता तथा संपूर्ण मानवता के लिये बहुत बड़ा उत्तरदायित्व सँभालना है।" – सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

योजना सृजन

डॉ. मनोज पंत, आईएएस, मुख्य सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार

श्री प्रभात कुमार मिश्रा, आईएएस, अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार

सचिव, लोक निर्माण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, श्रीमती अंतरा आचार्य, आईएएस

सिक्किम सरकार के मुख्य सचिव, श्री वी.बी. पाठक, आईएएस के साथ बैठक

श्री सी.एस. राव, आईएफएस, प्रमुख सचिव, पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग, सिक्किम सरकार

श्री जितेन्द्र सिंह राजे, आईएएस, आयुक्त-सह-सचिव एवं श्री मुख्य नगर नियोजक, शहरी विकास विभाग, सिक्किम सरकार

श्री एम.टी. शेरपा, आईएएस, सचिव, शहरी विकास विभाग, सिक्किम सरकार

श्री डी.आनंदन, आईएएस, प्रधान सचिव और श्री राज नारायण प्रधान, निदेशक (लेखा), ग्रामीण विकास विभाग, सिक्किम सरकार

श्री दोरजी दादुल, पीसीई-सह-सचिव और श्री भोला शर्मा, निदेशक (लेखा), सड़क और पुल विभाग, सिक्किम सरकार

"राष्ट्रभाषा हिंदी हो जाने पर भी हमारे व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन पर विदेशी भाषा का प्रभुत्व अत्यंत गर्हित बात है।" - कमलापति त्रिपाठी

DVC ने जलविद्युत परियोजनाओं के लिए HUDCO के साथ वित्तीय साझेदारी की घोषणा की

चालू वित्त वर्ष 2024-2025 के दौरान हडको ने दामोदर घाटी निगम (DVC) के साथ मैथन और पंचेत में अपनी दो जलविद्युत परियोजनाओं के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण हेतु निम्नानुसार वित्तीय समझौता किया हैं :

- पंचेत जलविद्युत इकाई-I (40 मेगावाट) के लिए ऋण राशि रु. 106.90 करोड़
- मैथन जलविद्युत इकाई 1 & 3 रुपये के लिए ऋण राशि रु. 85.86 करोड़

"सभ्य संसार के सारे विषय हमारे साहित्य में आ जाने की ओर हमारी सतत् चेष्टा रहनी चाहिए।" - श्रीधर पाठक

राम धारी सिंह दिनकर

23 सितंबर 1908 - 24 अप्रैल 1974

नई ज्योति से भीग रहा उदयाचल का आकाश,
जय हो, आँखों के आगे यह सिमट रहा खग्रास।

है फूट रही लालिमा, तिमिर की टूट रही घन कारा है,
जय हो, कि स्वर्ग से छूट रही आशिष की ज्योतिधारा है।

(15 अगस्त, सन् 1947 को स्वतंत्रता के स्वागत में रचित)

देबजनी मोहरार
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

''सच है, विपत्ति जब
आती है, कायर को ही
दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज
खोते।''

वीर रस की अपनी इन पंक्तियों और शब्दों के जरिए देशवासियों को नए उत्साह और उमंग से सराबोर करने वाले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' नाम के अनुरूप साहित्य जगत में सूर्य की तरह चमकते रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने कलम की शक्ति से अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया और आजादी के बाद राष्ट्र के नवनिर्माण में योगदान दिया। देश और समाज को राह दिखाने वाली राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत उनकी रचनाएं और कविताएं सदैव बनी रहेगी प्रेरणास्रोत।

राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने वाले रामधारी सिंह "दिनकर" का जन्म बिहार के बेगूसराय जिले के गॉव में 23 सितंबर 1908 का हुआ था। एक किसान परिवार में जन्म लेने वाले 'दिनकर' को आधुनिक युग के वीर रस का श्रेष्ठ कवि माना जाता है। वर्ष 1929 में जब उन्हें पटना कॉलेज में दाखिला मिला तो वह देश में आ रहे बदलावों के साथ सक्रियता से जुड़ते चले गए।

उन दिनों स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था। पटना में साईमन कमीशन के खिलाफ प्रदर्शन में उन्होंने भाग लिया। ब्रिटिश प्रशासन के लाठीचार्ज में लाला लाजपत राय की मौत की खबर ने दिनकर को आक्रोश से भर दिया। उसी दौरान रामधारी सिंह दिनकर ने देशभक्ति की कविताएं लिखनी शुरू की। उन्होंने सरदार पटेल द्वारा किसान सत्याग्रह नेतृत्व की सराहना और सम्मान में विजय संदेश शीर्षक से कविता लिखी थी। दिनकर ने शुरूआत में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन किया था लेकिन बाद में वह गांधीवादी आदर्शों के समर्थक हो गए।

समय के साथ-साथ दिनकर की ख्याति एक सशक्त कवि के रूप में स्थापित हो गई। उनकी रचनाएं स्वाधीनता संग्राम की धड़कन बन कर पाठकों के हृदय में गुंजने लगे। उन्होंने बहुत ही सरल और सीधी शैली में लोगों तक देशभक्ति की

"जब हम अपना जीवन, जननी हिंदी, मातृभाषा हिंदी के लिये समर्पण कर दे तब हम किसी के प्रेमी कहे जा सकते हैं।" - सेठ गोविंददास

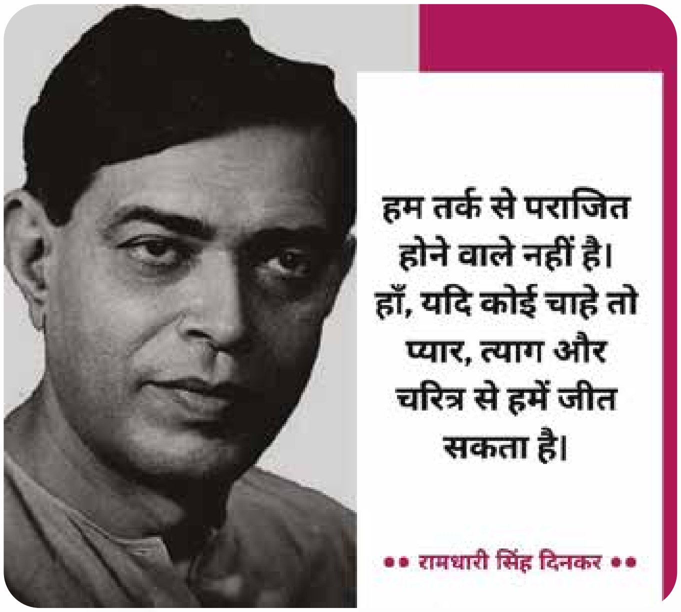

भावना को अपनी कविता के माध्यम से पहुंचाने का काम किया। 1935 में पहला कविता संग्रह "रेणुका" प्रकाशित हुआ जिसकी एक प्रति महात्मा गांधी को भी भेंट की गई थी। उनकी रचनाएं न केवल राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थी बल्कि जटिल विषयों में नैतिक दुविधाओं पर भी गहन विमर्श प्रस्तुत करती थी। उनके शब्द, विचार और लेखन का आम जनता के साथ बढ़िया तालमेल था। ऐसा ही एक उदाहरण "सिंहासन खाली करो कि जनता आती है" नामक उनकी कविता है, जिसने न केवल उनके पाठकों और अनुयायियों के बीच लोकप्रियता हासिल की बल्कि यह जनसाधारण के लिए राजनीतिक नारा भी बन गई। उन्होंने समाज में प्रचलित जाति और वर्ग संबंधी पूर्वाग्रहों की आलोचना करने के लिए कलम की शक्ति का इस्तेमाल किया।

रामधारी सिंह "दिनकर" का पूरा साहित्य खेत-खलिहान, गांव और गरीब से निकला है। बहुत सी साहित्यिक रचना ऐसी होती है, जो किसी न किसी को स्पर्श करती है। कभी कोई युवा को स्पर्श करे तो कभी बड़ों को स्पर्श करे। कभी पुरूष को स्पर्श करे, कभी नारी को स्पर्श करे, कभी किसी भू-भाग को तो किसी घटना को स्पर्श करता है। दिनकर की रनचाएं ऐसी ही सौगात हैं और वो हमें ताकत देती है।

1952 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया और 12 साल तक इस सदन के सदस्य रहे। आमतौर पर उन्हें वीरता और स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित प्रेरक कविताएं ही लिखी लेकिन उनकी कृति काव्य नाटक 'उर्वसी' इस नियम का अपवाद मात्र थी। यह पुस्तक मानवीय संबंधों के बारे में थी और इसके लिए उन्हें प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया था। 'संस्कृति के चार अध्याय' का प्रकाशन 1956 में हुआ जिसे 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1959 में ही भारत सरकार ने उन्हें "पद्म" विभूषण' से सम्मानित किया। उनके रश्मिरथी, कुरूक्षेत्र, उर्वशी, हुंकार, परशुराम की प्रतीक्षा जैसी कई अमर रचनाएं हैं जो आज भी पाठकों के बीच काफी पसंद है। रश्मिरथी काव्यखंड के हिस्से 'कृष्ण की चेतावनी' का पाठ भी वर्तमान में कई साहित्यिक कार्यक्रमों में किया जाता है। 24 अप्रैल 1974 को उनका निधन हो गया।

राष्ट्रकवि रामधारी सिह "दिनकर" के साहित्यिक कार्यो के स्वर्ण जयंती समारोह में 22 मई 2015 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि दिनकर जी का भी सपना बिहार आगे बढ़े, बिहार तेजस्वी, ओजस्वी, ये बिहार, संपन्न भी हो। बिहार को तेज और ओज मिले यह सब किसी से किराए पर लेने की जरूरत नहीं, उसके पास है। उसे संपन्नता के अवसर चाहिए, उसके आगे बढ़ने का अवसर चाहिए और बिहार में वो ताकत है, अगर एक बार अवसर मिल गया तो बिहार औरों को पीछे छोड़कर आगे निकल जाएगा। हम दिनकर जी के सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्व है और उनकी साहित्य रचना की 50 साल की यात्रा आज भी हमें कुछ करने की, कुछ कर दिखलाने की प्रेरणा देती है।

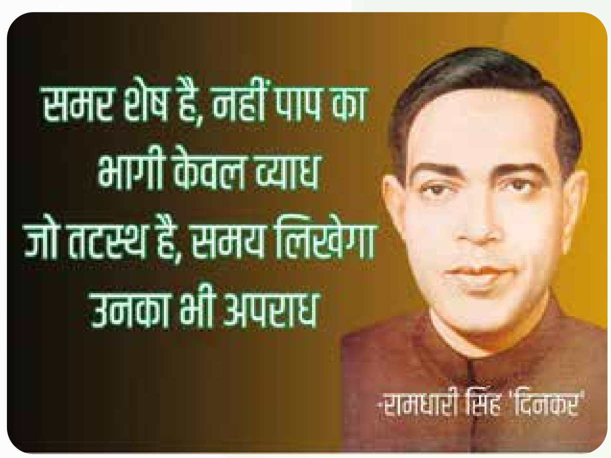

"अहिंदी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिंदी बोलकर अपना काम चला लेते हैं।" - अनंतशयनम् आयंगार

वरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

भ्रष्टाचार को कम करने में विजिलेंस और ई-गवर्नेंस की भूमिका

विजिलेंस का बहुत ही सरल अर्थ है सतर्कता या जागरूकता लाना। लेकिन यहाँ जब हम विजिलेंस की बात कर रहे हैं, तो हमारा मतलब भ्रष्टाचार से लड़ने के तरीकों से है। भ्रष्टाचार में सत्ता, धन और सरकारी संपत्ति का दुरुपयोग शामिल है। हमारा उद्देश्य भ्रष्टाचार को न्यूनतम स्तर पर लाना है। यह सतर्कता और चौकसी से सुनिश्चित किया जा सकता है, या हम इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि इसे ई-गवर्नेंस के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। ई-गवर्नेंस नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए सूचना तक पहुंच प्रदान करता है, उनकी सरकारी भागीदारी को सक्षम बनाता है और विजिलेंस को बढ़ाता है।

ई-गवर्नेंस का मतलब है विभिन्न आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों जैसे इंटरनेट, लोकल एरिया नेटवर्क, मोबाइल आदि का उपयोग सरकार द्वारा विजिलेंस, प्रभावशीलता, सार्वजनिक सुविधा, दक्षता, सेवा वितरण में सुधार लाने और भ्रष्टाचार को कम करने के लिए। इसी उद्देश्य से सरकार ने आयकर, केंद्रीय उत्पाद शुल्क, पासपोर्ट/वीजा, सड़क परिवहन, संपत्ति पंजीकरण, पेंशन, ग्राम पंचायत (ग्रामीण), कृषि, नगरपालिका, रोजगार विनिमय, भूमि रिकॉर्ड, कंपनी मामले, पुलिस, ई-कोर्ट आदि जैसे विभिन्न विभागों में ऑनलाइन सेवाओं को प्रोत्साहित किया है, जो राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना के तहत सार्वजनिक या सरकारी संगठनों में लागू हैं। हम कह सकते हैं कि ई-गवर्नेंस का मतलब है इलेक्ट्रॉनिक निगरानी और इलेक्ट्रॉनिक प्रबंधन।

ई-गवर्नेंस सिर्फ सरकारी वेबसाइटों और ई-मेल तक ही सीमित नहीं है। यह सिर्फ इंटरनेट पर सेवा वितरण या सरकारी जानकारी तक डिजिटल पहुंच या इलेक्ट्रॉनिक भुगतान तक ही सीमित नहीं है। यह इस बात को भी बदल देगा कि नागरिक सरकार के साथ कैसे संबंध रखते हैं, जितना कि यह इस बात को बदलता है कि नागरिक एक-दूसरे के साथ कैसे संवाद करते हैं। ई-गवर्नेंस नागरिकों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सरकार के साथ संवाद करने की अनुमति देगा, ताकि उनकी वास्तविक जरूरतें और कल्याण प्रतिबिंबित हो सके। यह नागरिकों को जानकारी तक पहुंच प्रदान करने में मदद करेगा और उन्हें सरकार की सामाजिक और आर्थिक विकास में भूमिका के बारे में जागरूक करेगा।

विजिलेंस का उद्देश्य अधिकारियों द्वारा अपराधों के कमीशन को रोकने में सहायता करना है, जो निगरानी के माध्यम से संभव होता है। यदि हम विजिलेंस में ई-गवर्नेंस जोड़ते हैं, तो यह और अधिक पारदर्शी हो जाएगा। अधिकारियों को अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होना चाहिए। ई-गवर्नेंस के तहत उन्हें ट्रैक करना आसान हो जाएगा। यह उनके मन में डर भी पैदा करेगा यदि वे कुछ गलत करने की सोच रहे होंगे। यह सार्वजनिक अधिकारियों की गेटकीपर की भूमिका को कम करता है और इस प्रकार भ्रष्टाचार के अवसरों को भी कम करता है। अब सरकार विभिन्न सार्वजनिक सेवाओं में ई-प्रोक्योरमेंट, ई-बिडिंग, ई-बिलिंग, ई-पेमेंट जैसे उपायों को अपनाने के लिए संगठनों को प्रेरित कर रही है। ई-गवर्नेंस अधिक विजिलेंस और भ्रष्टाचार के खिलाफ एक हथियार प्रदान कर सकता है। हर सरकारी सेवा को देश भर के हर नागरिक तक ऑनलाइन पहुंचाया जाना चाहिए। यह एक केंद्रीकृत डेटा तक पहुंच प्रदान कर सकता है जिसे ऑडिट और विश्लेषण में सुधार के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ई-गवर्नेंस प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है, जो सेवा स्तर और विजिलेंस को सुधारता है।

अब हम कह सकते हैं कि विजिलेंस और ई-गवर्नेंस एक-दूसरे के पूरक हैं। भ्रष्टाचार को रोकने या कम करने के लिए हमें एक पारदर्शी प्रणाली की आवश्यकता है, जिसे सभी क्षेत्रों में ई-गवर्नेंस लागू करके हासिल किया जा सकता है। हालांकि ई-गवर्नेंस भ्रष्टाचार के अंत की गारंटी नहीं देता है, लेकिन ई-गवर्नेंस की नीतियाँ निश्चित रूप से विजिलेंस, पारदर्शिता, जवाबदेही बढ़ाएंगी और भ्रष्टाचार के स्तर को एक सामान्य बिंदु तक कम कर देंगी।

"हिंदुस्तान की भाषा हिंदी है और उसका दृश्यरुप या उसकी लिपि सर्वगुणकारी नागरी ही है।" - गोपाललाल खत्री

ईशिता मण्डल
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

78वां स्वतंत्रता दिवस : क्या महिलाएं वास्तव में स्वतंत्र है?

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या में, मेरे मन में यह सवाल उठा कि क्या भारतीय महिलाएं वास्तव में स्वतंत्र हैं? शब्दकोश में 'स्वतंत्रता' का अर्थ आत्मनिर्भरता, स्वायत्तता और स्वावलंबन है। लेकिन वास्तविकता यह है कि महिलाएं आज भी रात में निर्भय होकर सड़कों पर चलने से डरती हैं। उनका पीछा किया जाता है, उन्हें छेड़ा जाता है, अश्लील और अभद्र शब्दों का सामना करना पड़ता है, और कभी-कभी स्थिति इससे भी आगे बढ़ जाती है। हाल ही में आरजी कर अस्पताल की घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि इन सवालों का उत्तर 'ना' है।

लड़कियाँ अपने कार्यस्थल पर भी असुरक्षित महसूस करती हैं, और उन्हें अपनी पसंद के कपड़े पहनने की आज़ादी भी नहीं है। क्या सिर्फ संवैधानिक रूप से स्वतंत्र देश होना पर्याप्त है? क्या हम सचमुच स्वतंत्रता के साथ जी रहे हैं? यह सवाल हमें बार-बार सोचने पर मजबूर कर देता है।

भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हुए कई वर्ष हो गए हैं। लेकिन आज भी, जब हम यह सवाल पूछते हैं कि क्या हमारी महिलाएं खुद को स्वतंत्र महसूस करती हैं, तो उत्तर शायद 'ना' ही होता है। क्या वे उत्पीड़न और अन्याय से मुक्त हैं? शायद नहीं।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों को याद करें : "जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक कल्याणकारी राज्य की कोई संभावना नहीं है। किसी पक्षी के लिए एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है।" यह कथन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि महिलाओं के खिलाफ हिंसा लगातार बढ़ रही है। बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या, एसिड हमले, घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, ऑनर किलिंग, यौन हिंसा जैसी समस्याएं समाज में गहराई तक फैली हुई हैं, और दुर्भाग्य से इन अपराधों का प्रतिशत हर साल बढ़ता ही जा रहा है।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या में, आइए हम यह संकल्प लें कि महिलाओं को हर क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त हो। हमें अपनी पुरानी सोच से बाहर आकर, उन्हें स्वतंत्र और सुरक्षित माहौल देना होगा। किसी भी देश का सार्वभौमिक विकास महिलाओं के बिना अधूरा है। जैसा कि नेल्सन मंडेला ने कहा था, "जब तक महिलाओं को सभी प्रकार के उत्पीड़न से मुक्ति नहीं मिलती, तब तक आज़ादी पूरी नहीं हो सकती।"

इस निबंध का मुख्य उद्देश्य समाज को इस सच्चाई से अवगत कराना है कि जब तक महिलाएं वास्तव में स्वतंत्र नहीं होतीं, तब तक एक समृद्ध और सुरक्षित समाज की कल्पना करना कठिन है।

भगवान जगन्नाथ
एकता और भक्ति के शाश्वत प्रतीक

भगवान जगन्नाथ, ओडिशा के आराध्य देवता और भारतीय आध्यात्मिकता के सबसे पूजनीय स्वरूपों में से एक हैं। पुरी की पवित्र नगरी में विराजमान, भगवान जगन्नाथ भगवान विष्णु के एक रूप हैं, जो अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ जगन्नाथ मंदिर में निवास करते हैं। यह मंदिर चार धाम तीर्थस्थलों में से एक है और पूरे देश में श्रद्धा का केंद्र है।

द्रुपद कुमार पुष्टि
सहायक कार्यकारी वित्त
कोलकाता

अनोखी मूर्ति

अन्य हिंदू देवताओं से अलग, भगवान जगन्नाथ की मूर्ति अनूठी है। उनकी बड़ी, गोल आँखें उनकी अनंत जागरूकता का प्रतीक हैं, और उनका अधूरा, समरूप स्वरूप उस दैवीय रहस्य को दर्शाता है जिसे मानव समझ नहीं सकता। नीम की लकड़ी से बनी उनकी मूर्ति हर 12 से 19 वर्षों में पवित्र अनुष्ठान नवकलेवर के तहत बदली जाती है।

उनका यह विशिष्ट रूप जाति, धर्म और सामाजिक भेदभाव से परे है और दैवीयता की सार्वभौमिकता को रेखांकित करता है। भगवान जगन्नाथ को स्नेहपूर्वक "संसार के स्वामी" कहा जाता है, जो हर किसी का स्वागत करते हैं।

जगन्नाथ मंदिर: आध्यात्मिक केंद्र

12वीं शताब्दी में राजा अनंतवर्मन चोड़गंग देव द्वारा निर्मित, जगन्नाथ मंदिर कलिंग वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना है। इसका ऊँचा शिखर और बारीक नक्काशीदार दीवारें ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा की मूर्तियाँ विराजमान हैं, जिनकी प्रतिदिन विस्तृत विधि-विधान से पूजा होती है।

मंदिर की एक अनोखी परंपरा है महाप्रसाद, जो पारंपरिक विधि से मिट्टी के बर्तनों में तैयार किया जाता है। इसे पवित्र मानते हुए, भक्त इसका सेवन कर आत्मिक तृप्ति प्राप्त करते हैं।

रथ यात्रा: एकता का पर्व

रथ यात्रा भगवान जगन्नाथ से जुड़ा सबसे प्रसिद्ध उत्सव है। हर साल लाखों भक्त पुरी में इकट्ठा होते हैं और विशाल लकड़ी के रथों पर सवार दैवीय भाई-बहन को सड़कों पर चलते हुए देखते हैं। यह भव्य जुलूस भगवान के अपने भक्तों से मिलने के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है, जो सामाजिक वर्गों की सीमाओं को तोड़ता है।

रथ यात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं है; यह एक सांस्कृतिक उत्सव है, जो विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को एकजुट करता है और भगवान जगन्नाथ के समावेशी उपदेशों को दर्शाता है।

भगवान जगन्नाथ का दर्शन

भगवान जगन्नाथ जीवन के चक्र और अस्थायित्व के शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी पूजा में वैष्णव, शैव, शक्त और यहां तक कि आदिवासी परंपराओं के तत्व शामिल हैं, जो इसे धार्मिक प्रथाओं का संगम बनाते हैं। उनके उपदेश भक्तों को विनम्रता, करुणा और विश्वास के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

भगवान जगन्नाथ का प्रभाव

पुरी के अलावा, भगवान जगन्नाथ का प्रभाव पूरी दुनिया में फैला हुआ है। भारत और विदेशों में उनके नाम पर कई मंदिर बने हैं। उनकी सार्वभौमिक अपील ने कला, साहित्य और भक्ति को प्रेरित किया है, जिससे वे लाखों लोगों के प्रिय देवता बने हुए हैं।

निष्कर्ष : भगवान जगन्नाथ केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि एक ऐसी दैवीय शक्ति हैं जो धर्म, समय और स्थान की सीमाओं से परे हैं। उनका मंदिर और उनकी पूजा भारतीय आध्यात्मिकता, संस्कृति और एकता का सार है। भक्तों के लिए, वे शाश्वत साथी हैं, जो प्रेम और कृपा के साथ जीवन की कठिनाइयों में मार्गदर्शन करते हैं।

जैसा कि एक भक्त कहता है, "भगवान जगन्नाथ का रथ केवल एक वाहन नहीं है; यह मुक्ति का मार्ग है, जहाँ भगवान स्वयं मानवता को गले लगाने आते हैं।"

"बच्चों को विदेशी लिपि की शिक्षा देना उनको राष्ट्र के सच्चे प्रेम से वंचित करना है।"
– भवानीदयाल संन्यासी

स्थापना दिवस समारोह

"अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।" - महात्मा गाँधी

वित्तीय क्षेत्र में सत्यनिष्ठा की अहमियत

राजेंद्र कुमार बेहरा
प्रबन्धक (वित्त)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

सत्यनिष्ठा का संबंध उच्च नैतिक सिद्धांतों से है। सत्यनिष्ठा की अवधारणा वित्तीय ईमानदारी तक ही सीमित नहीं बल्कि यह एक व्यापक अवधारणा है। ईमानदार होने का मतलब है अपने दायित्व को सही प्रकार से निभाना, हमेशा सच का साथ देना और मानवता के कल्याण के लिए कार्य करना। हिमालय की तरह अडिग स्वभाव वाला व्यक्ति ही ईमानदार हो सकता है। किसी भी परिस्थिति में अपने ईमान को डगमगाने नहीं देना। यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसने अपने जीवन ईमानदारी को बेहद गहरा उतारा हो। हालांकि कहना जितना आसान है करना उतना ही मुश्किल। बिल्कुल तलवार की धार पर चलने जैसा है। सत्य पर कायम रहने के लिए कड़े इम्तिहान से गुजरना होता है। गैरों की बात छोड़िए, अपने तक साथ छोड़ देते हैं। सत्य से डिगाने के तरह-तरह के दबाव और प्रलोभन दिए जाते हैं। ब्लैकमेल किया जाता है। इन परिस्थितियों में भी जो हार न माने और ईमानदारी के लिए प्रतिबद्ध रहे, वही ईमानदार होता है। राजा हरिश्चन्द्र की कहानी में भी यह बताया गया है कि ईमानदारी की राह पर चलने के लिए राजा हरिश्चन्द्र को अपना राज-पाट तक को छोड़ना पड़ा।

ईमानदारी, एक ऐसा गुण जिसे रातों रात हासिल नहीं किया जा सकता और ना ही ये क्षणिक होता है। ऐसा नहीं हो सकता कि आप आज ईमानदार रहेंगे और कल नहीं। यह एक जीवनशैली है। जीवन जीने का तरीका है। किसी व्यक्ति को ईमानदार बनाने में उसके बचपन संस्कार बेहद मायने रखते हैं। माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों से मिली अच्छी बातें, सीखें और सही आदतें सही बीज डालती हैं। स्कूली जीवन, साहित्य और

समाज से मिली सही शिक्षा से ये पौधा बड़ा होता है और सबको छाया और फल प्रदान करता है। इन सुसंस्कारों को अपनाना और जीवन में उतरना बेहद जरूरी है। यह एक ऐसा अभ्यास है जो हमारे भीतर सही को सही और गलत को गलत

"हिंदी को राजभाषा करने के बाद पूरे पंद्रह वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग करना पीछे कदम हटाना है।"- राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

कहने की ऊर्जा का संचार करता है एवं हमारे ईमानदार बनने का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि कोई ईमानदार है तो वो अपने जीवन के हरेक क्षेत्र में ईमानदार होगा। देश, समय और परिस्थितियां उसकी ईमानदारी को डिगा नहीं सकतीं। ऐसा व्यक्ति अपने समाज के लिए अनुकरणीय बन जाता है। उसके लिए उसका धन, उसकी ताकत उसकी ईमानदारी होती है। कहते हैं दौलत गई तो समझिए कुछ नहीं गया लेकिन इज्जत गई तो सब कुछ चला गया। ईमानदार लोग इसी इज्जत की खातिर जीते हैं। ऐसे व्यक्ति न तो खुद कोई गलत काम करते हैं और ना ही दूसरों को करने देते हैं। यदि आप दिन के उजाले में स्वच्छता का भाषण देते हैं और रात के अंधेरे में दूसरे के घर के सामने अपना कूड़ा फेंकते हैं तो आप कतई ईमानदार नहीं हैं। यह जीवन शैली नहीं बल्कि दिखावा है। यदि आप चालान काटने के डर से नियमों का पालन करते हैं तो आप ईमानदार नहीं हैं। अच्छा तो तब है जब आप चालान के डर से नहीं बल्कि हमेशा ही स्व इच्छा से ट्रैफिक नियमों का पालन करें। ईमानदारी आपके भीतर से आनी चाहिए किसी भय की वजह से नहीं। कुछ लोग दूसरों को तो ईमानदार होने का उपदेश और पाठ पढ़ाते हैं पर जब वक्त आता है तो खुद पीछे हट जाते हैं। सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की शपथ देश के प्रधानमंत्री से लेकर सार्वजनिक जीवन में बड़े ओहदों पर बैठने वाले सभी अफसरों को दिलाई जाती है।। ऐसा इसलिए जिससे ईमानदारी का महत्व आम जीवन के साथ-साथ पेशेवर जीवन में भी बहुत है। कहते हैं यथा राजा तथा प्रजा। राजा जैसा होगा, उसकी प्रजा भी वैसी ही होगी। यही वजह है कि नेता, अभिनेता, सरकारी कर्मचारी, बड़े उद्योग घरानों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज के सामने अच्छे उदाहरण पेश करें और अच्छे मानदंड स्थापित करें ताकि लोग उन्हें आदर्श मानकर सही रास्तों पर चलें।

हम जब केंद्रीय सतर्कता आयोग की वेबसाइट पर जाकर सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करते हैं और हम अपने नाम वाले इंटीग्रिटी प्लेज के सर्टिफिकेट को शान से फेसबुक पर डालते हैं तो हमे इस सर्टिफिकेट की कीमत भी पता होनी चाहिए। इस प्रमाणपत्र में जो लिखा है उसका पालन करने की हिम्मत अपने भीतर पैदा कर ईमानदारी को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। यह शपथ सही मायनों में तभी परिवार्थ होगा जब हम अपने जीवन के हरेक क्षेत्र में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को अपनाएँगे। ईमानदारी सिर्फ प्रदर्शित न करके, अपने रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करें।

हमें दूसरों के ईमानदार बनने की परवाह नहीं बल्कि स्वयं में सुधार करने के बारे में सोचना चाहिए। ऐसा नहीं है कि समाज में ईमानदारी की मिसालें कम हैं। हमें अपने आस-पास ईमानदारी के कई उदाहरण मिल जाएंगे। खेल भावना से लबरेज खिलाड़ी या टीम हार कर भी लोगों का दिल जीत लेती है और बेईमानी से मिली जीत का स्वाद फीका पड़ जाता है। ईमानदारी अमीर-गरीब नहीं देखती। ये तो किसी के भी संस्कारों में हो सकती है। हमने ऐसे किस्से जरूर सुने होंगे जब किसी टैक्सी ड्राइवर ने अपने यात्री का पैसों से भरा बैग उसे लौटा दिया हो। ये घटनाएं और मिसालें आज के जमाने में भी हैं। ईमानदारी की राह बहुत ही कठिन है, पर नामुमकिन नहीं। बस इरादे बुलंद होने चाहिए।

भ्रष्टाचार का दीमक हमारे देश की जड़ें खोखली कर रहा है। आए दिन नए घोटाले समाचार की सुर्खियों में होते हैं। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में नैतिकता के पतन ने भ्रष्टाचार को खूब फूलने-फलने का मौका दिया है। भ्रष्टाचार और राजनीति के गठजोड़ ने माहौल को सबसे अधिक खराब किया है। समस्या का समाधान तभी खोजा जा सकेगा जब हम समस्या की पहचान करेंगे और उसे स्वीकार करेंगे। भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के दोतरफा प्रयास किया जाना जरूरी हैं। एक तरफ कानून और केंद्रीय सतर्कता आयोग एवं केंद्रीय जाँच ब्यूरो जैसी एजेंसियों को निष्पक्ष बनाने के साथ-साथ उनके हाथ मजबूत किए जाने की आवश्यकता है तो दूसरी ओर हमारे देश की युवा पीढ़ी में ऐसे संस्कार डालने की जरूरत है जिससे वे खुद-ब-खुद भ्रष्टाचार से दूरी बना लें। ये दोहरे प्रयास भ्रष्टाचार की जड़ें मिटाने में बेहद मददगार साबित

"हिंदी के राष्ट्रभाषा होने से जहाँ हमें हर्षोल्लास है, वहीं हमारा उत्तरदायित्व भी बहुत बढ़ गया है।"- मथुरा प्रसाद दीक्षित

हो सकते हैं।

भ्रष्टाचार निरोधक कानून में संशोधन किया गया है और इसमें रिश्वत देने वाले के लिए भी सजा का प्रावधान किया गया है। मतलब जो लालच देकर ईमान बिगाड़ सकता है और भ्रष्टाचार की वजह बन सकता है अब उस पर भी कानूनी कार्रवाई होगी। कानून की नजर में रिश्वत लेने वाला और देने वाला दोनों ही गुनहगार हैं। इसके साथ ही कई और संशोधन भी किए गए हैं जो भ्रष्टाचार की रोकथाम में जरूर सहायक होंगे। एक सख्त कानून के - साथ-साथ उसे लागू करने वाली एजेंसियों का मजबूत होना भी जरूरी है। इससे आम लोगों का इन एजेंसियों पर भरोसा बढ़ेगा। लोग बेखौफ होकर बेखौफ होकर भ्रष्टाचार की शिकायतें कर सकेंगे तथा व्हिसिल ब्लोअर की भूमिका निमा सकेंगे और इन एजेंसियों को भी आजादी के साथ अपने दायित्व का निर्वाह करने का मौका मिलेगा।

कुछ इसी उद्देश्य से सरकारी संस्थानों और लोक उपक्रमों में सतर्कता विभाग स्थापित किए गए हैं जो अपना काम बखूबी कर रहे हैं। उनकी जिम्मेदारी बढ़कर उनका दायित्व है और इन एजेंसियों को भी आजादी के साथ अपने दायित्व का निर्वाह करने का मौका मिलेगा।

कुछ इसी उद्देश्य से सरकारी संस्थानों और लोक उपक्रमों में सतर्कता विभाग स्थापित किए गए हैं जो अपना काम बखूबी कर रहे हैं। उनकी जिम्मेदारी भ्रष्टाचार में लिप्त कर्मचारियों को सजा दिलाना तो है लेकिन इससे भी बढ़कर उनका दायित्व है कर्मचारियों को भ्रष्टाचार के प्रति सतर्क और सजग रखना। कर्मचारियों में जागरूकता फैलाना ताकि वे से खुद को दूर रख सकें और भ्रष्टाचार दिखने पर उसकी बेहिचक उसकी सूचना संस्था को दे सकें। सतर्कता अधिकारियों की मौजूदगी ने संस्थानों में विशेष तौर से बैंकों में भ्रष्टाचार की रोकथाम में अहम और कारगर भूमिका निभाई है। सूचना का अधिकार अधिनियम भी सरकारी क्षेत्रों में पारदर्शिता लाने में बेहद सहायक रहा है।

शासन में सत्यनिष्ठा निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करती है:

- सत्यनिष्ठा सरकारी कार्यों में जनता के विश्वास को बनाए रखती है।
- सार्वजनिक सेवाओं में सत्यनिष्ठा ईमानदारी से बनी रहती है।
- सत्यनिष्ठा सरकार की जवाबदेही को प्रोत्साहित करती है।
- सत्यनिष्ठा गारंटी देती है कि प्रोटोकॉल का पालन किया जाता है।
- यह कदाचार, धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की संभावना से बचने का प्रयास करता है

देश को भ्रष्टाचार मुक्त करना अकेले कानून और एजेंसियों का दायित्व नहीं है। अपने देश के प्रति बहुत बड़ी जिम्मेदारी हम सभी नागरिकों का भी है। सिर्फ कमियों की शिकायतें करने, तमाशबीन बने रहने और स्वराज का सपना देखने से भ्रष्टाचार पर काबू नहीं पाया जा सकता है। सभी नागरिकों के मन में अपने देश के प्रति प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और दायित्व की भावना होनी चाहिए। देश हमें क्या दे रहा है, इससे ज्यादा फिक्र इसकी बात की करनी चाहिए कि हम देश को क्या दे सकते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण, जरूरतमंदों की मदद, देश के संसाधनों की रक्षा और उनका सही इस्तेमाल करने की भावना हमें एक अच्छा नागरिक बना सकती है।

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों का भाव यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो शायद ही कभी हमारा मन विचलित होकर भ्रष्टाचार पर की ओर झुकेगा या उससे प्रभावित होगा।

जो भरा नहीं है भावों से
जिसमें बहती रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं

नए भारत का निर्माण हमारी युवा पीढ़ी के कंधों पर है तथा हमारी युवा पीढ़ी का भविष्य हम जैसे अभिभावकों से के हाथ में है। हमारा दायित्व है कि हम अपने बच्चों को सही शिक्षा दें, जीवन मूल्यों और संस्कारों की अहमियत समझाएं तथा नैतिकता और ईमानदारी के रास्ते पर चलने के ने लिए उन्हे प्रेरित करें। यदि हमारा ईमान बुलंद होगा तो उसे डिगा पाना आसान नहीं होगा। हमें मुश्किल से मिली इस आजादी की इज्जत करनी चाहिए और सबको साथ लेकर तरक्की का सपना साकार करना चाहिए। अधिकतर लोग भ्रष्टाचार और बेईमानी के खिलाफ हैं और देश को साफ - सुथरा देखना चाहते हैं। तभी तो एक आवाज पर इस देश में विमुद्रीकरण जैसे बड़े फैसले तक - हो जाते हैं। ये मिसालें इस बात की द्योतक हैं कि नए भारत के निर्माण की प्रक्रिया चालू है। इसमें थोड़ा समय लग सकता है परंतु यकीन है कि हम देर आएंगे, दुरुस्त आएंगे।

जीते जी

बातें उनकी जांचीं-परखी
होती थी, अब जब नहीं रही
झकझोर रही है यादों में
उनकी हर बातें कही गई
बोला करती खुल्लम खुल्ला
हर वार सोचकर नपा-तुला
दमखम होता था बातों में
रीति-रम-नीति में सनी हुई
उनकी हर बातें कही गई
बेधड़क बोलती दिल को खोल
कभी कहुआ, कभी मीठी बोल
अब मोल समझ में आने लगा
अब मोल समझ में आने लगा
जब छोड़ दुनिया चली गई
उनकी हर बातें कही गई
टर्र-टर्र लगता, कभी दुःख होता
जब खरा बोलता था तोता
उड़ गया छोड़ पिंजरे को तब
परिजन तौलेंगे सही-सही
उनकी हर बातें कही गई
लगता कितनी थी नासमझी
दिया मोल नहीं जब जीते-जी
उल्टे उलझा करता था, मन
खींझा करता सुन खरी-खरी
उनकी हर बातें कही गई
सच कहा गया है कर्मों का
गुण-दोष प्राणी के मर्मों का
एहसास हुआ करता जग को
जब रंथी मजी, सांसे न रही
उनकी हर बातें कही गई।।

स्वपन चन्द्र पॉल
सहायक, ग्रेड-I
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

तुम कहाँ

शहर गर्म हो रहा है
गाँव की गली भी
ए.सी. की गर्म हवाओं से।
नर्म रोशनी चाँद को भी
तीखी लगती है
कि क्यों भेजा चाँद पर यान को
वायुयान चन्द्रयान से
निकलती चिंगारियां
खुशियों का अवसर भी
है दूर अपनी कामनाओं से।
तेज गति घर जर्जर,
शीशे की दीवारों से आच्छादित,
सोच में है कमी वक्त की.
व्यर्थ भागती सभ्यताओं में।
संतरियों और शस्त्रों से
खतरा है जन-जीवन को
अखबारों में प्रचार प्रबल है
तेज कलम को विपदाओं में।
किताबों में जो इतिहास है
पृथक उससे इति लिखी जा रही
खंड-खंड में बाँट रहे हैं
भविष्य, पुरातन मान्यताओं से।
चमक रहा उजाले में,
सूर्य किरण से शहर-शहर,
मानवता किन्तु अंधकार में
खोज रहा है जीवन अभावों में।

नवनीता पाल
सहायक प्रबंधक (सचिवीय)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

"भारतवर्ष में सभी विद्याएँ सम्मिलित परिवार के समान पारस्परिक सद्भाव लेकर रहती आई हैं।"- रवींद्रनाथ ठाकुर

जब मैं कश्मीर से मिला : जन्नत की यात्रा

जीवन में परिवर्तन ही एकमात्र स्थिर है। मेरे लिए नई जगहों की यात्रा सुखद बदलाव है। यह एकरसता को तोड़ती है और मुझे नए परिदृश्य और लोगों से परिचित कराती है। मैं हमेशा से कश्मीर जाना चाहता था। इसलिए अप्रैल में मैंने अपने माता-पिता और दीदी को धरती पर स्वर्ग दिखाने के लिए ले जाने का फैसला किया। हमने कोलकाता से श्रीनगर का सफर गो फर्स्ट एयरवेज से किया और फ्लाइट शाम 6:30 बजे श्रीनगर पहुंचा। लाल चौक श्रीनगर में पहली रात हमने makemytrip.com के जरिए अपना होटल रूम बुक किया था। श्रीनगर का लालचौक कॉरपोरेट-बिजनेस हब है। होटल के कमरे की बालकनी से सामने घंटाघर दिखता है। दिनभर चहल-पहल और जवानों का पहरा रहता है। शाम 6:30 बजे मार्केट बंद होने लगता है।

दूसरा दिन: श्रीनगर में दर्शनीय स्थलों की यात्रा: कश्मीर अपने अनगिनत बागों के कारण धरती पर स्वर्ग के रूप में जाना जाता है। कश्मीर में मैंने सबसे पहले जिस स्थान पर जाने का फैसला किया, वह श्रीनगर में परी महल था। बगीचों की मनमोहक सुंदरता ने पल भर में मेरा दिल चुरा लिया। बगीचे से डल झील का नज़ारा कितना दिव्य था।

मेरा अगला पड़ाव था चश्मा शाही गार्डन जो अपने ताजे पानी के प्राकृतिक झरने के लिए जाना जाता है। यह मुगल गार्डन विभिन्न रंगों के फूलों से घिरा हुआ है और झील का चिकित्सीय पानी इतना शांत दिखता है।

मैंने 'ट्यूलिप गार्डन' का भी दौरा किया, जो विभिन्न रंगों में रंगीन ट्यूलिप के साथ खिलने वाला एक और शानदार बगीचा है। एशिया में सबसे बड़ा ट्यूलिप गार्डन कहा जाने वाला यह, इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप गार्डन श्रीनगर के दर्शनीय स्थलों में से एक है जो ज़बरवान पर्वत की तलहटी में स्थित है। बगीचे में कई प्रकार के अन्य फूल भी हैं जैसे डैफोडील्स, जलकुंभी, गुलाब, नार्सिसस और अन्य सजावटी पौधे।

30 हेक्टेयर भूमि में फैला, श्रीनगर का यह प्रमुख पर्यटन स्थल वसंत ऋतु के दौरान जीवंत हो जाता है जब ट्यूलिप महोत्सव आयोजित किया जाता है। जनता के लिए खोला गया, यह त्योहार कश्मीर में सभी प्रकार के यात्रियों को अवश्य देखना चाहिए क्योंकि इसका उद्देश्य बगीचे की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध कश्मीरी संस्कृति और इसके हस्तशिल्प की झलक दिखाना है। कश्मीर के सभी खूबसूरत बगीचों में से ट्यूलिप गार्डन मेरा पसंदीदा था।"

"उस दिन मैंने डल झील में अपने हाउसबोट में एक यादगार शिकारा की सवारी का आनंद लेकर अपने दिन का अंत शानदार ढंग से किया।

तीसरा दिन: गुलमर्ग- फूलों का प्रदेश : गुलमर्ग रोमांचक गोंडोला सवारी के लिए जाना जाता है। समुद्र तल से लगभग 2720 मीटर ऊंचाई पर स्थित गुलमर्ग कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक

"इतिहास को देखते हुए किसी को यह कहने का अधिकारी नहीं कि हिंदी का साहित्य जायसी के पहले का नहीं मिलता।" - (डॉ.) काशीप्रसाद जायसवाल

है। कश्मीर के बारामूला जिले में स्थित गुलमर्ग धरती का खूबसूरत हिल स्टेशन है, जिसे हम फूलों का प्रदेश के नाम से भी जानते हैं। गुलमर्ग में अच्छी खासी हिमपात होने के कारण यह स्नो एक्टिविटियों जैसे माउंटेन बाइकिंग, स्कीइंग,और स्लेज राइडिंग के लिए काफी प्रसिद्ध है।"

गुलमर्ग की यात्रा में आप गंडोला लिफ्ट की सवारी करना बिल्कुल भी न भूलें। इस लिफ्ट की सवारी से हमने 13,500 मीटर ऊंचाई से कश्मीर की खूबसूरत वादियों के दर्शन किये, जिसे देखकर अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। अगर आप गोल्फ के शौकीन है तो गुलमर्ग में आप गोल्फ खेल का लुफ्त भी उठा सकते है।

तीसरे दिन के अंत में मैं वापस श्रीनगर लौट आया और अपने होटल के कमरे में आराम किया।

दिन 4: पहलगाम की यात्रा: पहलगाम के लिए एक लंबी ड्राइव के बाद, मैं लगभग 1 बजे घाटी पहुंचा। उस दिन खराब मौसम के कारण मुझे अपने बुक किए गए होटल के कमरे में ही रहना पड़ा।

दिन 5 पहलगाम में घाटियों का भ्रमण : मेरा पहला पड़ाव अरु घाटी था - अनंतनाग में एक दूरस्थ स्वर्ग। अरु घाटी की सुंदरता का वर्णन करना कठिन है क्योंकि यह आप पर इतना गहरा जादू करती है। इतनी ठंड थी कि मैं अप्रैल के महीने में काँप रहा थी। मैंने स्थानीय दुकानों से स्वेटर और कश्मीरी कपड़े भी खरीदे।

चंदनवाड़ी के रास्ते में मैं मिनी-चिड़ियाघर में रुका जहाँ मुझे तेंदुआ, भालू और हिरण दिखाई दिए। लिद्दर नदी के किनारे चंदनवाड़ी के लिए प्राकृतिक ड्राइव वास्तव में एक शानदार अनुभव था।

मेरा आखिरी पड़ाव बेताब वैली था, जिसका नाम बॉलीवुड की मशहूर फिल्म के नाम पर रखा गया था। यह स्थान फिल्म में जितना अच्छा दिखा था, वास्तव में उससे कहीं अधिक मनोरम लग रहा था। मैंने यादों को कैद करने के लिए तस्वीरें लीं और इन हसीं वादियों की वैभवता को कैद किया।

मैंने रात के लिए होटल पहलगाम रिट्रीट में चेक इन किया। सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित मेरे लक्ज़री फैमिली सुइट से मुझे घाटी के आकर्षक दृश्य दिखाई देते थे। मैं और अधिक नहीं मांग सकता था।

दिन 6: वापस श्रीनगर और स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा: मैंने दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए श्रीनगर वापस जाने का फैसला किया। मैं निशांत गार्डन गया, जहाँ मैंने रंगीन कश्मीरी पोशाक में प्रथागत तस्वीरें क्लिक कीं। होटल शाह जहाँ रेजीडेंसी में चेक-इन किया।

श्रीनगर में आप नौकायन का लुफ्त उठा सकते हैं। यहां का तैरता सब्जी बाज़ार तथा तैरता डाकघर पर्यटकों के लिए खास आकर्षण का केंद्र होते हैं। इसका अनुभव करने के लिए मैं उस सुबह शिकारा की सवारी के लिए गया था।

कश्मीर में शिकारा राइड के बारे में: शिकारा एक पारंपरिक गोंडोला प्रकार की हल्की रोइंग नाव है, जो ज्यादातर अन्य झीलों के अलावा प्राचीन डल झील पर देखी जाती है। हाउसबोट के साथ-साथ इसे सांस्कृतिक प्रतीक भी माना जाता है। इन खूबसूरती से सजी हुई नावों को झील पर शांति से सरकते हुए देखना आंखों के लिए एक इलाज है।

एक बंगाली परिवार होने के नाते, विश्व प्रसिद्ध कश्मीरी व्यंजनों को ना चखना मेरे लिए असंभव था। कश्मीरी व्यंजन और विशेष रूप से वाज़वान पूरे विश्व भर में प्रचलित है। यदि आप शॉपिंग की शौकीन हैं तो यहां के लाल चौक मार्केट में आपको कश्मीरी शॉल, कश्मीरी सेब, बादाम और अखरोट ये सारी चीज़ें उपलब्ध हो जाएंगी। श्रीनगर में बहुत ज्यादा बर्फ दिसंबर से फरवरी के महीने में पड़ती है। जो लोग गर्मियों में किसी पर्यटन स्थल घूमने का शौक रखते हैं, उनके लिए कश्मीर बिल्कुल जन्नत जैसा है।

मेरा अगला पड़ाव प्रसिद्ध शंकराचार्य मंदिर था। शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर यात्रा के मुख्य आकर्षणों में से एक है। मंदिर श्रीनगर में ज़बरवान रेंज पर शंकराचार्य पहाड़ी की चोटी पर है। पहाड़ी की चोटी से श्रीनगर के पूरे शहर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है, विशेष रूप से डल झील। मंदिर के अंदर का शिवलिंग सबसे बड़ा है। मंदिर तक पहुंचने के लिए 300 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।

दिन 7 सोनमर्ग : 7वें दिन मैंने सोनमर्ग की ओर प्रस्थान किया। सोनमर्ग, जो कि जम्मू और कश्मीर राज्य के गंदरबल जिले में समुद्र तल से 2740 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ है। सोनमर्ग का मतलब है - सोने का मैदान। सोनमर्ग कश्मीर के प्रसिद्ध हिल स्टेशनों में से एक है, जो अपनी के लिए काफी प्रचलित है। हिमालय की वादियों में बसा सोनमर्ग, जिसे देखने के लिए हर साल हजारों की संख्या में पर्यटक यहाँ घूमने आते हैं।

सोनमर्ग कश्मीर का प्रमुख हॉलिडे डेस्टिनेशन है, जहां आप स्कीइंग, स्लेज राइडिंग, घुड़सवारी का आनंद ले सकती हैं। यहाँ के बर्फ से ढके पर्वतमाला और चारों तरफ फैले हरे-भरे घास के मैदानों का दृश्य मन मोह लेता है। सोनमर्ग बॉलीवुड की शूटिंग के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। मैंने सोनमर्ग में कई बेहतरीन जगहों का दौरा किया, जैसे थाजीवास ग्लेशियर, जोजी ला झील, कृष्णासर झील और विशनसर झील। रात में मैं वापस श्रीनगर में अपने होटल लौट आई।

दिन 8 वापस कोलकाता: कोलकाता के लिए मेरी उड़ान दोपहर 1 बजे निर्धारित थी। कश्मीर में मेरा पूरा अनुभव सुंदर और स्वर्गीय था। कश्मीर घाटी की यह यात्रा मेरे दिल के बहुत करीब है, जिसे हमेशा संजो कर रखा जाएगा। मैं सभी को जीवन में कम से कम एक बार कश्मीर जाने का सुझाव देना चाहता हूं।

"हिंदी ने राष्ट्रभाषा के पद पर सिंहानसारुढ़ होने पर अपने ऊपर एक गौरवमय एवं गुरुतर उत्तरदायित्व लिया है।" - गोविंदबल्लभ पंत

मेरा सफरनामा

ओम प्रकाश

अनुसंधान अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यान्वयन, कोलकाता

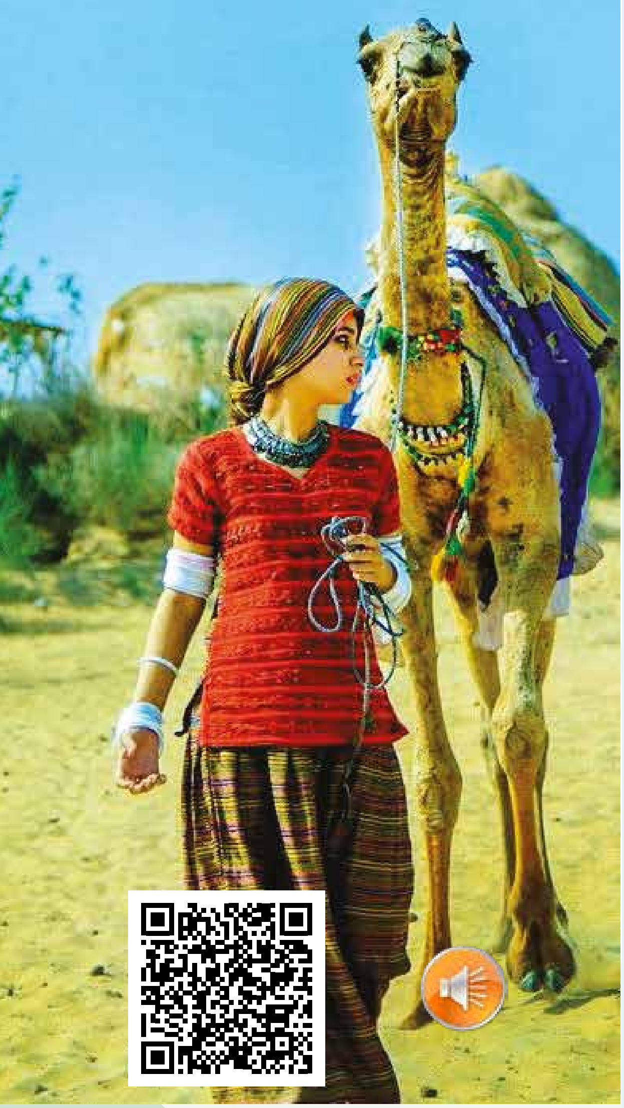

जन्म से मृत्यु तक, जिंदगी एक सफर है...
गम से ख़ुशी पाने तक ...। रोने से हँसने तक
सब एक सफ़र है जीवन

जैसे ही मैंने नए क्षितिज तलाशने की अपनी यात्रा शुरू की मुझे नहीं पता था कि जीवन कितना बदल रहा है और यह यात्रा कितनी सुखद होगी। जीवन स्वयं एक यात्रा है और इस यात्रा को पूरा करना होगा। इस यात्रा का जितना अंश यात्रा में बीते वही हितकर है। विभिन्न स्थानों की यात्रा करने से हमारा अनुभव बढ़ता है और कष्ट सहन करने तथा स्वावलंबी बनने का अवसर मिलता है। कुछ दिनों के लिए दैनिक कार्यचक्र के एक रास्ता वाली जिंदगी से मुक्ति मिल जाती है, जिससे जीवन में आनंद और स्फूर्ति की लहर दौड़ जाती है। यात्रा करने से विभिन्न जातियों व स्थानों के रीती-रिवाजों, भाषाओं आदि से हम परिचित होते है।

जीवन का सच्चा सार सबसे अप्रत्याशित और आकर्षक तरीकों में निहित है। जब हम यात्रा के बारे में सोचते हैं, तो हम हमेशा उन स्मारकों के बारे में सोचते हैं जिन्हें हम देखते है और साहसिक कार्य जो हम करते हैं, लेकिन यात्रा उससे कहीं अधिक बेहतर है। यह आत्म-खोज की यात्रा है और जीवन की सूक्ष्म बारीकियां जो वास्तव में हमारे संस्मरणों के कैनवास को चित्रित करती हैं। मेरे द्वारा उठाए गए प्रत्येक कदम के साथ मैंने पाया कि मैं दुनिया द्वारा प्रस्तुत आनंद के सरल लेकिन गहन उदाहरणों की ओर आकर्षित हुई हूँ। मुझे आज भी याद है अपने कॉलेज के दिनों में जब मैं स्नातक में थी तब मैंने एक छोटे से शहर में गई थी अपने कॉलेज के किसी परियोजना के सिलसिले से।

मैं गोल पत्थरों से बनी एक छोटी सी सड़क पर एक छोटे आरामदायक कैफे में गई। हवा में एक अद्भुत सी सुगंध थी..। ताज़ी बनी काफी की। जब मैंने खिड़की से बाहर देखा तो मुझे कुछ दिलचस्प ध्यान में आया। सड़क पर एक संगीतकार एक पुराना गिटार लिए खड़ा था। उसने एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला संगीत बजाया, ऐसा लग रहा था कि यह शहर के लय के साथ चल रहा है। जो आगे पैदल चल रहे थे वे कुछ देर के लिए रुके जैसे-जैसे वे सुनते गए, उनके कदम धीमे होते गए। इससे मुझे उस ख़ुशी को समझाने में मदद मिली जब लोग इस तरह के साधारण क्षणों का आनंद लेते हैं, ऐसे क्षण जो व्यवस्थित नहीं होते लेकिन वे अप्रत्याशित रूप से घटित होते हैं सबको एक साथ लाता है। उस पल मुझे उस खुशी का एहसास हुआ जो यह छोटी-छोटी चीजों में और एक व्यक्ति द्वारा आपके लिए किये गए प्रयासों में निहित है। फिर मैं स्थानीय बाजारों में गई, जो रंगों और सुगंधों से भरे थे। वहाँ कई हस्तशिल्प की दुकानें थी जो हमारे देश की सुन्दरता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती थीं। जब दुकानदार अपने ग्राहकों के साथ हंसी-मजाक कर रहे थे तो उनके चेहरे खिल उठे।

मैं आगे चली और एक हरे-भरे पार्क में गई जो घास की मिटटी की सुगंध से भरी हुई थी। पत्तों की सरसराहट ने दृश्य को सुखद पृष्ठभूमि प्रदान की। मुझे उस हरे पार्क ने पानी ओर खिंच लिया, व्यस्त शहर के बीच यह शांति को स्वर्ग प्रतीत हो रहा था। तभी मैंने बच्चों के एक समूह को पतंग उड़ाते हुए देखा, रंगीन पतंगें आसमान में ऊंची उडान भर रही थीं। और उनके चेहरे पर ख़ुशी इतनी कीमती थी। उनके चेहरे प्रत्याशा

"हिंदी राष्ट्रभाषा है, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक भारतवासी को इसे सीखना चाहिए।" - रविशंकर शुक्ल

और उत्साह से रंगे हुए थे, और उन्होंने पुरे संकल्प से साथ डोरियाँ पकड़ रखी थी। जब वे प्रत्येक जीत का जश्न मना रहे थे तो उनकी हंसी हवा में गूंज रही थीं, उसी जोश के साथ हार का मजा भी ले रहे थें। उस दौरन मुझे एहसास हुआ कि मैं सर्वोत्तम बनने की दौड़ में हमेशा अपने जीवन के पिरामिड के शीर्ष में रहने के बावजूद जीवन जीना भूल गए हैं। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उन बच्चों का यह लापरवाह रवैया उनके वजन के बिल्कुल विपरीत था जो अक्सर वयस्कता के साथ होता है। बच्चे जिम्मेदारियां और व्यस्त जीवन की जटिलताओं से अनजान थें। वे स्वतंत्र थे उन चिंताओं से जो हमारी उम्र बढ़ने के साथ बढ़ती है। बच्चों के खेल ने ऐसा पाठ प्रस्तुत किया जिसे हममें से कई लोग याद रखने की कोशिश करते हैं...। मौजूद रहने और उस पल को उसके पुरे रूप में स्वीकार करने का मूल..। खामियां और सुन्दरता। यह हमारे लिए अपनी चिंताओं को दूर करने और जीवन में छोटी-छोटी चीजों का आनंद लेने में शामिल होने का आह्वान है।

जीवन बाजार, सुगन्धित रसोई और साझा भोजन की यादें मेरे मन में अंकित हो गई। भारत के व्यंजनों ने मुझे पोषण से कहीं अधिक प्रदान किया है, इसने मुझे एक गहन उपहार दिया था..। इसके लोगों, इसके इतिहास और इसकी आत्मा की समझ। प्रत्येक निवाले के साथ मैंने भारत के सर का स्वाद चखा- स्वादों की एक सिम्फनी, संस्कृतियों की एक टेपेस्ट्री और कनेक्शन की एक यात्रा जो सीमाओं को पर कर गई। जब मैं हलचल बहरे बाजारों में घूमती रही, तो मेरी संवेदनाएं जाग उठीं, जहाँ विक्रेता कुशलतापूर्वक तैयारी करते ऐसे व्यंजन की जो रंगों और सुगंधों के साथ नृत्य करते प्रतीत होते थे। इस छोटे से शहर की तंग गलियों में कुरकुरी जलेबियाँ की महक मेरे कानों से टकराई, जबकि मिटटी की कप में सुगन्धित चाय ने मेरे हाथों को गर्म कर दिया।

मुझे दूर-दराज के इलाके में दिन भर मछली पकड़ने के बाद लौटते मछुआरे और समुद्र तटीय समुदाय को देखने का अवसर मिला। जैसे ही उन्होंने समुद्री भोजन से भरी टोकरियाँ निकालीं, जिनकों उन्होंने पानी में इकट्ठा किया था, उनके चेहरे ख़ुशी और उत्साह से भर गए। वे करीब नजर आए दोस्तों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और अपनी उपलब्धियों पर गर्व कर रहे हैं। इसने प्रदर्शित किया कि कैसे उनके सामान्य अनुभवों ने उन्हें एक साथ बांध दिया। इसने मुझे याद दिलाया कि ख़ुशी बार-बार मिलती है जब व्यक्ति सहयोग करते हैं और समूह के रूप में कार्य को पूरा करने में आनंद लेते हैं।

जैसे-जैसे मैं अपनी यात्रा के अंत के करीब आया, मैंने उन सभी अलग-अलग तरीकों के बारे में सोचा जो मैंने देखें थे। ख़ुशी मानवीय संबंधों और जीवन के रोजमर्रा के आश्चर्यों की सराहना के ताने-बाने में बुन गया है।

मेरा साहसिक कार्य केवल नए क्षेत्रों की भौतिक खोज नहीं था बल्कि साथ ही सचेतनता और अवलोकन की शक्ति के प्रति गहन जाग्रति भी थी। मुझे पता चला कि ख़ुशी सिर्फ गहर पर ही नहीं बल्कि कहीं भी मिल सकती है। एक कठिन यात्रा का अंत या भव्य संरचनाओं की छाया में भी। यह हर चीज़ में पाया जा सकता है..। बातचीत, मुस्कराहट और साझा अनुभव जो हमारे जीवन की रंगीनियों में रंग भर देते हैं।

जैसे ही मैं घर वापस आयी, ये यादें मेरे रास्ते में मार्गदर्शक के रूप में बनी रहीं। मुझे इस यात्रा ने याद दिलाया कि दुनिया छोटी-छोटी खुशियों से भरी है जो बस उन लोगों द्वारा खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो इन्हें असलियत में जीते है। जी तो हम सभी रहे हैं, लेकिन जीवन को असल मायने में जीना हम भूल गए हैं। छोटी-छोटी चीजों को देखने, महसूस करने और उनमें आनंद ढूंढने का समय। इसलिए जैसा की मैंने अपनी यात्रा पर विचार करती हूँ। जिन अनुभवों ने मेरे दिल को छू लिया, मैं खुद से एक वादा करती हूँ। मैं छोटे खुशियों को संजोने की प्रतिज्ञा करती हूँ और जीवन में उन सामान्य क्षणों में ख़ुशी ढूंढना जिन पर अक्सर किसी का ध्यान नहीं जाता।

सफ़र की सफ़र ने बहुत कुछ सिखाया
जहाँ भी गया वहाँ कुछ पाया
कहीं धुप की गर्मी, कहीं हवाओं की नर्मी को
जिंदगी से जुड़ा पाया
सफ़र की सफ़र ने बहुत कुछ सिखाया
चाहे वह पत्थर हो हाथ में या फिसलती हुई रेत
हर कुदरत ने जिंदगी को महसूस कराया
सफ़र की सफ़र ने बहुत कुछ सिखाया
समंदर की लहरें हो या ख़ामोशी रेगिस्तान की
पहाड़ों की गूंज हो या फिर हवाओं का शोर
हर आवाज ने जिंदगी से मिलाया
सफ़र की सफ़र ने बहुत कुछ सिखाया
जन्म से मृत्यु तक जिंदगी एक सफ़र है
गम से ख़ुशी पाने तक रोने से हँसाने तक
सब एक सफ़र है जीवन

अर्चिता दत्ता
प्रबन्धक (वित्त)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

साइबर आक्रमण (साइबर अटैक)

ये साइबर हमले न केवल संगठन के लिय बल्कि राष्ट्र के लिए भी खतरनाक साबित हो सकते हैं। आज तक भारत और वैश्विक स्तर पर कई डिजिटल हमले के मामले सामने आए हैं जिससे अधिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है। यदि प्रारंभिक चरण में नियंत्रित नहीं किया गया तो ये हमले देश की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करेंगे। हाल ही में एक चीनी छात्र जो साइबर अपहरण का शिकार हुआ था उसे ग्रामीण इलाके में सुरक्षित पाया गया। अधिकारियों द्वारा पता लगाए जाने पर पता चला कि उसके चीन स्थित माता-पिता ने उसके स्थान का पता लगने से पहले ही बड़ी फिरौती दे दी थी।

साइबर अपहरण से तात्पर्य : ऐसे अपराध से है जिसमें अपहरणकर्ता अपने शिकार को छिपने के लिए राजी कर लेते है और फिर फिरौती के लिए उनके प्रियजनों से संपर्क करते हैं। इस प्रकार के घोटाले में पीड़ित का अपहरण नही किया जाता बल्कि उन्हें यह विश्वास दिलाकर धोखा दिया जाता है कि वो खतरे में हैं। अपहरणकर्ता यद्यपि शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं होते फिर भी विडियो कॉल प्लेटफार्म के माध्यम से पीड़ित पर ऑनलाइन निगरानी रखते हैं। वे पीड़ित पर अपना प्रमुख अपराध तथा साइबर आक्रमण करते हैं।

साइबर अपराध की व्याख्या : हर कोई सोचता है कि केवल किसी का निजी डेटा चुराना ही साइबर अपराध है। लेकिन हम इसकी परिभाषा में कह सकते है कि साइबर आक्रमण अपराध किसी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस (कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल आदि) का उपयोग करके उन्हें नुकसान पहचाने की कोशिश करने को संदर्भित करता है। इसके अलावा यह एक अवैध गतिविधि है जिसमे चोरी से लेकर आपके सिस्टम या आईपी पते का उपयोग अपराध करने के लिए एक उपकरण के रूप में करने तक की कई समस्याएं शामिल हैं।

साइबर अपराध के प्रकार : मोटे तौर पर हम कह सकते है कि साइबर अपराध को चार प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। ये हैं वित्तीय, गोपनीयता, हैकिंग और साइबर आतंकवाद।

वित्तीय अपराध में वे उपयोगकर्ता या खाताधारकों के पैसे चुराते हैं। इसी तरह वे कंपनियों का डेटा भी चुराते हैं जो वित्तीय अपराधों को जन्म दे सकता है। साथ ही उनेक कारण लेन-देन में भारी जोखिम होता है। हर साल हैकर्स व्यापारियों और सरकार के

"जिसका मन चाहे वह हिंदी भाषा से हमारा दूर का संबंध बताये, मगर हम बिहारी तो हिंदी को ही अपनी भाषा, मातृभाषा मानते आए हैं।" - शिवनंदन सहाय

लाखों-करोड़ों रुपए चुरा लेते हैं। गोपनीयता अपराध में आपका निजी डेटा चुराना शामिल है जिसे आप दुनिया के साथ साझा नहीं करना चाहते हैं। इसके अलावा इसके कारण लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और कुछ लोग अपने डेटा के दुरूपयोग के कारण आत्महत्या भी कर लेते हैं। हैकिंग में वे जानबूझकर किसी वेबसाइट को नुकसान पहुँचाने के लिए उसे ख़राब करते हैं। इसके अलावा वे मौजूदा वेबसाइट को नष्ट कर देते हैं या उसमे बदलाव करके उसकी कीमत कम कर देते हैं। आधुनिक समय में आंतकवाद 10-20 साल पहले की तुलना में कहीं ज्यादा बढ़ गया है। लेकिन साइबर आतंकवाद सिर्फ आतंकवादियों या आतंकवादी संगठनो से सबंधित नही हैं बल्कि किसी व्यक्ति या संपत्ति को खतरे में डालना या उसे खतरे में डालना भी साइबर आतंकवाद आक्रमण है।

भारत में साइबर आक्रमण : वेब दुनिया या साइबर स्पेस लाखों और अरबों उपयोगकर्ताओं और वेबसाइटों का एक विशाल समुदाय है। इसके अलावा लोग खरीदारी, फ़िल्में, संगीत, विडियो गेम, लेन-देन और ई कॉमर्स आदि जैसे विभिन्न उपयोगों के लिए इसका प्रयोग करते हैं। प्रौद्योगिकी के इस युग में और इंटरनेट तक आसान पहुंच के कारण कोई भी व्यक्ति आसानी से इस तक पहुंच सकता है। पिछले दशक से इस तेजी से विकास के कारण इसके अलावा, इंटरनेट ने सूचनाओ की एक ऐसी दुनिया खोल डिजिटल वातावरण का बेहतर उपयोग होगा इसलिए इसे सुरक्षित करने के लिए सभी हितधारकों द्वारा संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है जिसमें कानून प्रवर्तन एजेंसियां, सरकारें, प्रौद्योगिकि उद्योग और समाज के व्यक्ति शामिल हैं।

साइबर अपराध की विशेषताएं :

साइबर अपराध के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है :-

साइबर स्टॉकिंग:-ऑनलाइन उत्पीड़न और ऑनलाइन दुर्व्यवहार दोनों ही स्टॉकिंग के अंतर्गत आते हैं। इसमें आमतौर पर उत्पीड़न या धमकी भरा व्यवहार शामिल होता है। इसमें कोई व्यक्ति बार-बार संलग्न होता है। जैसे किसी व्यक्ति का पीछा करना, किसी व्यक्ति के घर या व्यवसाय स्थान पर दिखाई देना, परेशान करने वाले फ़ोन कॉल करना, लिखित संदेश या वस्तुएं छोड़ना या किसी व्यक्ति की संपत्ति को नुकसान पहुँचाना।साइबर स्टॉकिंग में ऑफलाइन स्टॉकिंग के साथ महत्वपूर्ण विशेषताएं साझा की जाती है। कई स्टॉकर (ऑनलाइन या ऑफलाइन) अपने पीड़ितों को नियंत्रित करने की इच्छा से प्रेरित होते हैं। ऑनलाइन दुर्व्यवहार का एक बड़ा हानिकारक प्रभाव यह है कि पीड़ित अपने दोस्तों, परिवारों और सामाजिक गतिविधियों से दूर रहने लगता है।

वायरस संचारित करना : वायरस ऐसे प्रोग्राम होते है जो खुद को कंप्यूटर या फाइल से जोड़ते हैं और फिर खुद को नेटवर्क पर अन्य फाइलों और अन्य कंप्यूटरों पर डेटा को प्रभावित करते हैं। या तो इसे बदलकर या हटाकर व्यक्तियों के कंप्यूटरीकृत सिस्टम को प्रभावित करने में वर्म आक्रमण प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

हैकिंग : सामान्य शब्दों में हैकिंग का मतलब है अनाधिकृत पहुंच के लिए कंप्यूटर सिस्टम या कंप्यूटर नेटवर्क की कमजोरियों और सुरक्षा का पता लगाना और उनका फायदा उठाना। हैकिंग करने के लिए कंप्यूटर विशेषता और कुछ टूल या स्क्रिप्ट का उपयोग करते है।

साइबर अपराध से संबंधित कानून : साइबर अपराध को फैलने से रोकने और लोगों के हितों की रक्षा के लिए सरकार ने साइबर अपराध से जुड़े कई कानून बनाए हैं। साथ ही ये कानून साइबर अपराध से सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसके अलावा सरकार ने साइबर अपराध की समस्या से जल्द-से-जल्द निपटने के लिए पुलिस स्टेशनों में साइबर सेल की भी शुरुआत की है।

साइबर अपराध रोकने के तरीकों का विस्तार : साइबर अपराध ऐसी चीज़ नहीं है जिससे हम खुद निपट नहीं सकते। इसी तरह अपने सामान्य ज्ञान और तर्क का थोड़ा सा इस्तेमाल करके हम साइबर अपराधों को होने से रोक सकते हैं। साइबर अपराध एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर और नेटवर्क शामिल है। किसी भी कंप्यूटर का अपराधिक स्थान पर मिलना कंप्यूटर अपराध कहलाता है। कंप्यूटर अपराध में नेटवर्क शामिल नहीं होता है किसी की निजी जानकारी को प्राप्त करना और उसका गलत इस्तेमाल करने की घटना को रोकने हेतु निम्न रूप से व्यक्त किया गया है :-

साइबर अपराध का वर्गीकरण और विशेषताएं : पिछले दो दशकों में दुनिया भर के व्यवसाय, उपभोक्ता और सरकारें अपने व्यवसाय को संचालित करने के लिए साइबर स्पेस और क्लाउड वातावरण में चले गए हैं। बहुत से लोग अपने दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा साइबर स्पेस में बिताते हैं। नए प्रकार के सामाजिक संबंधों का निर्माण और आनंद लेते है। हालाँकि अपराधियों ने ऑनलाइन धोखाधड़ी से मिलने वाले लाभों की पहचान कर ली है इसलिए जोखिम और खतरे भी बढ़ गए हैं। वह व्यक्ति जो किसी और ISP उपयोगकर्ता आईडी और पासवर्ड तक पहुंच प्राप्त करता है या तो हैकिंग करके या अवैध तरीकों से उस तक पहुंच प्राप्त करके दूसरे व्यक्ति की अनुमति के बिना इंटरनेट तक पहुंचने के लिए इसका उपयोग करता है। अपराधियों द्वारा पीड़ितों के बैंक खाते से पैसे निकालकर अपने मौद्रिक लाभ के लिए डेबिट और क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया जाता है। ईमेल, एसएमएस, स्पूफिंग एक स्पूफ किया गया ईमेल को तरीकों से गलत प्रस्तुत करता है। यह अपने भूल को उससे अलग दिखाता है, जहां से यह वास्तव में उत्पन्न होता है। यहाँ एक अपराधी ईमेल पते मोबाइल फ़ोन नंबर आदि के रूप में दुसरे कि पहचान चुराता है और इंटरनेट के माध्यम से संदेश भेजता है। क्रॉस-साईट स्क्रिप्टिंग (XSS) एक प्रकार की कंप्यूटर सुरक्षा भेजता है। क्रॉस-साईट स्क्रिप्टिंग द्वारा आक्रमण वेबसाइट की पूर्वनिर्धारित पहुंच अनुमतियों को बायपास कर सकता है। रिफ्लेक्टेड XSS हमले को गैर-स्थायी XSS के रूप में भी जाना जाता है। साइबर स्व-चैटिंग एक पसिद्ध डोमेन नाम पंजीकृत करने और फिर उसे जरुरत मंदों को उची कीमत पर बेचने का कार्य है। इसका मतलब है कि जब दो व्यक्ति एक ही डोमेन नाम के लिए दावा करते है।

साइबर अटैक आंतकवाद के दंड का प्रावधान : साइबर आतंकवाद के मामले में दंड विधान के लिए सूचना तकनीक कानून 2000 में धारा 66 एक को जगह दी गई है। यदि कोई भारत की एकता, अखंडता, सुरक्षा या संप्रभुता को भंग करने या इसके निवासियों को आंतकित करने के लिए किसी अधिकृत व्यक्ति को कंप्यूटर के इस्तेमाल से रोकता है या रोकने का कारण बनता है। बिना अधिकार के या अपने अधिकार का अतिक्रमण कर जबरन किसी कंप्यूटर के इस्तेमाल की कोशिश करता है कंप्यूटर में वायरस जैसे किसी ऐसी चीज़ डालता है या डालने की कोशिश करता है। इससे लोगों की जान को खतरा पैदा होने की आंशका हो या जीवन के लिए आवश्यक सेवाओं में जानबूझकर खलल डालने की कोशिश करता है या धारा 70 के तहत संवेदनशील जानकारियों का बुरा असर पड़ने की आंशका हो या अनाधिकार या अधिकारों का अतिक्रमण करते हुए जानबूझकर किसी कंप्यूटर से ऐसी सूचनाएं हासिल करने में कामयाब होता है जो देश की सुरक्षा या ने देशों के साथ उनके संबंधों के नजरिए से सवेंदनशील है या किसी भी गोपनीय सूचना इस इरादे के साथ हासिल करता है जिससे भारत की सुरक्षा, एकता, अखंडता एवं संप्रभुता अन्य देशों के साथ इसके संबंध सार्वजनिक जीवन या नैतिकता पर बुरा असर पड़ता है या ऐसा होने कि आशंका हो देश की अदालतों की अवमानना अथवा मानहानि होती हो या ऐसा होने की आशंका हो किसी विदेशी राष्ट्र अथवा किसी अन्य को ऐसी सूचना से फायदा पहुँचता है तो उसे साइबर अटैक का आरोपी माना जा सकता है। यदि कोई क्यक्ति साइबर अटैक आंतकवाद फैलाता है या ऐसा करने की किसी साजिश में शामिल होता है तो उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई जा सकती है। 2005 में प्रकाशित एडवांस्ड ला लेक्सीकॉन के तीसरे संस्करण में साइबरस्पेस शब्द को भी इसी तर्ज पर परिभाषित किया जाता है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में प्लेटिंग शब्द पर खासा जोर दिया गया है क्योंकि दुनिया के किसी भी हिस्से से इस तक पहुंच बनाई जा सकती है। लेखक ने आगे इसमें साइबर चोरी शब्द को ऑनलाइन कंप्यूटर सेवाओ के इस्तेमाल के परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया है। इस शब्दकोष में साइबर अटैक कानून कि इस तरह व्याख्या की गई है। कानून का वह क्षेत्र जो कंप्यूटर और इन्टरनेट से संबंधित है और उसके दायरें में इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी साइद्व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचनाओं तक निबधि पहुंच आदि आते है।

***** स्ट्रॉन्ग पासवर्ड बनाएं, अपडेट करते रहें

टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन ऑन रखें	अलग-अलग ईमेल ID बनाएं	फिशिंग लिंक पर क्लिक न करें	रिमेंबर पासवर्ड का यूज न करें

***** सभी अकाउंट का अलग पासवर्ड हो

ब्राउजर हिस्ट्री डिलीट करें	एंटी वायरस प्रोग्राम को यूज करें	पब्लिक Wi-Fi का यूज न करें	साइबर कैफे पर लॉगइन न करें

साइबर कैफे पर लॉगइन न करें — अकाउंट लॉग आउट रखें

"जैसे-जैसे हमारे देश में राष्ट्रीयता का भाव बढ़ता जायेगा वैसे ही वैसे हिंदी की राष्ट्रीय सत्ता भी बढ़ेगी।" - श्रीमती लोकसुन्दरी रामन्

01/03/2025 को नलबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन

हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 01/03/2025 को नालबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया गया। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय का सभी कर्मचारियों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ उस दिन विभिन्न खेलों में भाग लिया। क्षेत्रीय प्रमुख के एक संक्षिप्त भाषण के पश्चात्, कार्यक्रम की शुरुयात राष्ट्रगान गा कर की गई, जिसके बाद योग सत्र, प्राणायाम एवं एक साथ शपथ ली गई। खेल दिवस के अवसर पर विभिन्न खेलों एवं गया। बॉल थ्रोइंग, म्यूजिकल चेयर, चम्मच रेस, रस्साकशी। विजेताओं को खेलकूंद प्रतियोगिता के बाद सम्मानित किया गया।

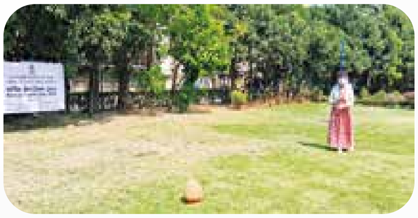

"हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।" – मैथिलीशरण गुप्त

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A.I.) और मशीन लर्निंग (M.L.)

चिरंजीब कर्मकार

मल्टी टास्किंग स्टाफ (एसजी)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न कारणों और मुद्दों को लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता बराबर चर्चा में बनी हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान की एक ऐसी शाखा है, जिसका काम बुद्धिमान मशीन बनाना है। हाल ही में सरकार के थिंक टैंक नीति आयोग और गूगल के बीच इस बात पर सहमति बनी है कि दोनों भारत की उदीयमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelliegence-AI) और मशीन लर्निंग (Machine Learning-ML) के पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहलों पर मिलकर एक साथ काम करेंगे, जिससे देश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पारिस्थितिक तंत्र निर्मित करने में मदद मिलेगी। नीति आयोग को एआई जैसी प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने और अनुसंधान के लिये राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

सामान्य तौर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग को समानार्थी समझा जाता है, लेकिन ऐसा है नहीं। भ्रम की स्थिति उत्पन्न न हो इसीलिए आगे इन दोनों के बीच अंतर को स्पष्ट किया गया है।

क्या है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस?

सरलतम शब्दों में कहें तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है एक मशीन में सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को कंप्यूटर साइंस का सबसे उन्नत रूप माना जाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार

- पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक (Purely Reactive)
- सीमित स्मृति (Limited Memory)
- मस्तिष्क सिद्धांत (Brain Theory)
- आत्म-चेतन (Self Conscious)

ऐसे हुई थी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली।
- जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी।
- इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।
- इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिये 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया।
- यूरोपीय संघ के देशों ने भी 'एस्प्रिट' नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी।
- इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, जैसे-Very Large Scale Integrated सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी'की स्थापना की।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख अनुप्रयोग

- कंप्यूटर गेम (Computer Gaming)
- प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (Natural Language Processing)
- प्रवीण प्रणाली (Expert System)

"अंग्रेजी को भारतीय भाषा बनाने का यह अभिप्राय है कि हम अपने भारतीय अस्तित्व को बिल्कुल मिटा दें।" - पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

- दृष्टि प्रणाली (Vision System)
- वाक् पहचान (Speech Recognition)
- बुद्धिमान रोबोट (Intelligent Robot)

भारत सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास

- राष्ट्रीय स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिये नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। इसमें सरकार के प्रतिनिधियों के अलावा शिक्षाविदों तथा उद्योग जगत को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
- वर्तमान बजट में सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्टअप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3-D प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल हैं।
- इसके अलावा सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।

सावधानी भी ज़रूरी है

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से हमारे रहने और कार्य करने के तरीकों में व्यापक बदलाव आएगा। रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों से तो उत्पादन और निर्माण के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगा। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के मुताबिक अकेले अमेरिका में अगले दो दशकों में डेढ़ लाख रोज़गार खत्म हो जाएंगे।

निष्कर्ष: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की संकल्पना बहुत पुरानी है। ग्रीक मिथकों में 'मैकेनिकल मैन' की अवधारणा से संबंधित कहानियाँ मिलती हैं अर्थात् एक ऐसा व्यक्ति जो हमारे किसी व्यवहार की नकल करता है। प्रारंभिक यूरोपीय कंप्यूटरों को 'लॉजिकल मशीन' की तरह डिजाइन किया गया था यानी उनमें बेसिक गणित, मेमोरी जैसी क्षमताएँ विकसित कर इनका मैकेनिकल मस्तिष्क के रूप में इस्तेमाल किया गया था। लेकिन जैसे-जैसे तकनीक उन्नत होती गई और कैलकुलेशंस जटिल होते गए, उसी तरह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की संकल्पना भी बदलती गई। इसके तहत इनको मानव व्यवहार की तरह विकास करने की कोशिश की गई, ताकि ये अधिकाधिक इस तरह से इंसानी कामों को करने में सक्षम हो सकें, जिस तरह से आमतौर पर हम सभी करते हैं। कुल मिलाकर एक शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय हमारे लिये फायदेमंद भी हो सकता है और नुकसानदेह भी। फिलहाल हम नहीं जानते कि इसका स्वरूप आगे क्या होगा, इसीलिये इस संदर्भ में और ज़्यादा शोध किये जाने की ज़रूरत है।

खेलो इंडिया खेलो

जिन्दगी जीने का नाम है
हर मुकाम हासिल करने की ख्वाहिश है।
वो दिन भी क्या दिन थे
और आज भी क्या दिन है।
पता करना ही बड़ा मुश्किल
क्योंकि जमाना बदल गया है।
90s का था वो जमाना
नहीं आयेंगे फिर कभी वो रोजाना।
खेलना कूदना हंसना और हंसाना
क्योंकि नहीं था मोबाइल का जमाना।
शाम होते ही मैदान ही था ठिकाना ॥
और अभी मैदान का नहीं है ठिकाना
नहीं रहे खेलने कूदने का जमाना
अभी तो हैं मोबाइल का जमाना।
वो दिन भी क्या दिन थे
क्रिकेट खेलने के लिए गेंद नहीं था।
पर खिलाड़ियों की कमी नहीं थी
और आज भी क्या दिन है।
जहां दस दस गेंद हाजिर है पर
दस खिलाड़ियों एक साथ पाना नामुमकिन है।
क्योंकि अभी तो मोबाइल का जमाना है
खेल-खेल में जीवन के सब बिगड़े काम बन जाते
हार-जीत से ऊपर उठकर हम आदर्श बनाते
बंद करो खेलना मोबाइल पर।
उठो चलो मैदान पर खेलो इंडिया खेलो "

संदीप घोष
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

"साहित्य के इतिहास में काल विभाजन के लिए तत्कालीन प्रवृत्तियों को ही मानना न्याय-संगत है।" - अंबाप्रसाद सुमन

प्लास्टिक प्रदूषण

ऋषभ चक्रबर्ती

पुत्र-देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख

प्लास्टिक प्रदूषण आज की सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है। यह समस्या न केवल हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि यह पृथ्वी के सभी जीवों के लिए खतरा बन गई है। प्लास्टिक का उपयोग आजकल हर जगह होता है। हम इसका उपयोग पैकेजिंग, बोतलें, बैग, खिलौने, और बहुत सारी चीजों में करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि प्लास्टिक का निपटारा कैसे किया जाता है और यह हमारे पर्यावरण को कैसे नुकसान पहुँचाता है?

प्लास्टिक का उपयोग : प्लास्टिक का निर्माण 20वीं सदी में शुरू हुआ था और तब से इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। यह हल्का, मजबूत और सस्ता होता है, जो इसे कई उद्योगों में आवश्यक बनाता है। लेकिन इसके लाभों के साथ-साथ इसके नुकसान भी हैं। प्लास्टिक को नष्ट होने में सैकड़ों साल लगते हैं। जब हम प्लास्टिक का सही तरीके से निपटारा नहीं करते, तो यह हमारे पर्यावरण में जमा होने लगता है।

प्लास्टिक प्रदूषण के कारण

प्लास्टिक प्रदूषण के कई कारण हैं:

1. अवशिष्ट प्रबंधन की कमी: कई जगहों पर कचरे का सही निपटारा नहीं किया जाता। प्लास्टिक कचरा खुले में फेंका जाता है, जिससे यह मिट्टी और जल स्रोतों में पहुँच जाता है।

2. एकल-उपयोग प्लास्टिक: आजकल हम एकल-उपयोग प्लास्टिक की चीजों का ज्यादा उपयोग करते हैं, जैसे कि प्लास्टिक की बोतलें, स्ट्रॉ, और बैग। ये चीजें तुरंत फेंकी जाती हैं और पुनर्चक्रण में नहीं जातीं।

3. जानकारी की कमी : लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी नहीं है। वे सोचते हैं कि इसे फेंकने से कोई समस्या नहीं होगी।

प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभाव

प्लास्टिक प्रदूषण का प्रभाव अत्यधिक गंभीर है:

1. पर्यावरण पर प्रभाव : प्लास्टिक समुद्रों, नदियों, और नालियों में पहुँचकर जलीय जीवन को नुकसान पहुँचाता है। मछलियाँ और अन्य जलीय जीव प्लास्टिक के टुकड़ों को खा लेते हैं, जिससे उनकी मौत हो सकती है।

2. स्वास्थ्य पर प्रभाव : जब प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है, तो यह विषाक्त पदार्थों को छोड़ सकता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। खाने के माध्यम से ये विषाक्त पदार्थ हमारे शरीर में पहुँच सकते हैं।

3. जलवायु परिवर्तन : प्लास्टिक का उत्पादन और निपटारा जलवायु परिवर्तन में भी योगदान करता है। प्लास्टिक को बनाने के लिए पेट्रोलियम का उपयोग होता है, जो कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करता है।

समाधान : प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए हमें कुछ कदम उठाने होंगे:

1. पुनर्चक्रण: प्लास्टिक का सही तरीके से पुनर्चक्रण करना आवश्यक है। हमें इसे कचरे में फेंकने के बजाय पुनर्चक्रण की प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए।

2. एकल-उपयोग प्लास्टिक का उपयोग कम करना: हमें एकल-उपयोग प्लास्टिक की चीजों का उपयोग कम करना चाहिए। इसके बजाय, हमें बायोडिग्रेडेबल या पुन: प्रयोज्य विकल्पों को चुनना चाहिए।

3. जन जागरूकता : लोगों को प्लास्टिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों के बारे में शिक्षित करना जरूरी है। स्कूलों और समुदायों में जागरूकता कार्यक्रम चलाने से हम इस समस्या को रोक सकते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, लेकिन हम सब मिलकर इसे कम कर सकते हैं। हर छोटे कदम का प्रभाव होता है। यदि हम अपनी आदतों को बदलें और प्लास्टिक का सही तरीके से उपयोग करें, तो हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अगली पीढ़ी के लिए एक साफ-सुथरा और स्वस्थ वातावरण छोड़ें। इसलिए, चलिए हम सभी मिलकर इस दिशा में प्रयास करें और प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने में अपना योगदान दें।

एक नया सफ़र

निकल कर तेरे आँचल की छाँव से
किसी के आँगन की खुशियों की एक कड़ी हो गई,
आकर देख लेना माँ एक बार, तेरी गुड़िया अब बड़ी हो गई।
गुहे गुड़िया से खेलने वाली
किसी की जिंदगी भर की सहचरी हो गयी
आकर देख लेना माँ एक बार, तेरी गुड़िया अब बड़ी हो गई।
मान, मर्यादे, रिश्ते, नाते
समझ नहीं आते ये कभी तेरे लफ़्ज़ों के इरादे,
आज मौजूद इनमें मेरी हर घड़ी हो गई,
आकर देख लेना माँ एक बार, तेरी गुड़िया अब बड़ी हो गई।
हर बात तुझसे कहने वाली, जज्बातों में बहने वाली
तेरे बिन खामोश रातों की प्रहरी हो गयी,
कहती तो है ये पूरी दुनिया पर
तू भी आकर एक बार देख लेना माँ
तेरे बिन भी तेरी छांव में पलते पलते
तेरी गुड़िया अब तेरी ही छवि हो गई।

कुमारी मानसी सिंह
सुपुत्री-वरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबन्धक
प्रबन्धन

"आइए हम आप एकमत हो कोई ऐसा उपाय करें जिससे राष्ट्रभाषा का प्रचार घर-घर हो जाये और राष्ट्र का कोई भी कोना अछूता न रहे।" - चन्द्रबली पांडेय

मौर्य मोहरार
सुपुत्र : देबजानी मोहरार
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवालय)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्या होते हैं – हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन? वे कैसे करते हैं काम

पिछले कुछ सालों से भारत में इलेक्ट्रिक वाहन तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। हाल ही में लॉन्च किए गए कई उपयोगकर्ताओं के इस्तेमाल किए जा सकने वाले दोपहिया और चार पहिया वाहनों के अलावा, हमने मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों में सिटी बसों जैसे कई सार्वजनिक परिवहन वाहनों को बिजली से चलते देखा है। हालाँकि, जब देश विद्युत क्रांति की ओर बढ़ रहा है तब भी ऐसे कई कारण हैं जो ग्राहकों को इलेक्ट्रिक वाहनों में शिफ्ट करने से रोकते हैं। इनमें से एक कारण इनके चार्जिंग के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है, जो EV यूजर्स के लिए लंबी यात्रा में बाधक है। इन कारणों से निपटने के लिए, कंपनियां अब हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहनों (HEVs) को बाजार में ला रही हैं। ये ऐसी कारें हैं जो पेट्रोल इंजन और इलेक्ट्रिक मोटर दोनों के फायदों को एक ही कार में देती हैं, यह तकनीक दोनों ही तरह के वाहनों की कमियों को पूरा कर सकती हैं। आज हम आपको बताने वाले हैं कि ये हाइब्रिड इंजन कैसे काम करते हैं और ये पारंपरिक इलेक्ट्रिक वाहनों से कैसे अलग होते हैं।

क्या हैं हाइब्रिड वाहन ?

हाइब्रिड वाहनों या एचईवी को समझने के लिए यह जानिए कि पेट्रोल से चलने वाले वाहन चलने के लिए पेट्रोल का दहन का करते हैं, जिससे कार के इंजन में ईंधन के नियंत्रित स्थिति जलने से गर्मी और गति दोनों के रूप में ऊर्जा निकलती है, जिसे बाद में पिस्टन, शाफ्ट, गियर और एक्सल के एक कंबाइंड सिस्टम से पहियों को चलाया जाता है।

वहीं एक इलेक्ट्रिक कार में न तो इंजन होता है और न ही गियर। इसमें पॉवर के लिए एक रिचार्जेबल बैटरी होती है, और वाहन इलेक्ट्रिक मोटर की मदद से चलता है। इसमें पूरा काम इलेक्ट्रिक एनर्जी पर होता है। जिसके कारण इनकी सर्विसिंग की भी कम ज़रूरत होती है। हालाँकि, बैटरी समय के साथ साथ चार्ज को स्टोर करने की क्षमता को धीरे-धीरे खोती रहती है। भारत में इस समय मौजूद अधिकांश इलेक्ट्रिक वाहनों की रेंज काफी सीमित है।

हाइब्रिड वाहनों में, कई प्रकार के सिस्टम होते हैं, जिनसे कार को पॉवर

"हिंदी आज साहित्य के विचार से रुढ़ियों से बहुत आगे है। विश्वसाहित्य में ही जानेवाली रचनाएँ उसमें हैं।" - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

मिलती है। इनमें दो प्रमुख टाइप होते हैं कॉमन सीरीज हाइब्रिड और पैरलल हाइब्रिड।

सीरीज हाइब्रिड कारें

जैसा कि नाम से पता चलता है, ये कारें एक इलेक्ट्रिक मोटर का उपयोग करती हैं, जो सीरीज में एक पेट्रोल इंजन से जुड़ी होती हैं। इस सिस्टम में, इलेक्ट्रिक मोटर के अलावा, पेट्रोल इंजन का वाहन के व्हील्स से कोई संपर्क नहीं होता है। इसमें एक जनरेटर पेट्रोल इंजन से ऊर्जा को सीधे बिजली में बदल देता है, जिससे इलेक्ट्रिक मोटर को पॉवर मिलती है। सीरीज हाइब्रिड वाहन एक इलेक्ट्रिक मोटर पर निर्भर होते हैं, और इन्हें इलेक्ट्रिक कारों की तरह बाहर से चार्ज नहीं किया जा सकता है। इनके लिए पेट्रोल जरूरी होता है। ये वाहन भारत जैसे क्षेत्र, जहां चार्जिंग के लिए पर्याप्त इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद नहीं हैं, के लिए उपयुक्त हैं।

पैरलल हाइब्रिड कारें

पैरलल हाइब्रिड कारों में एक सामान्य ट्रांसमिशन होता है जो इलेक्ट्रिक मोटर और ईंधन इंजन दोनों से बिजली ले सकता है, दोनों पैरलल में जुड़े होते हैं। ऐसी कारें पूरी तरह से ऑटोमैटिक, मैनुअल और सीवीटी (कंटीन्यूअस वेरिएबल ट्रांसमिशन) से भी लैस हो सकती हैं। इस सिस्टम में, इलेक्ट्रिक मोटर को केवल रीजेनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम से ही रिचार्ज किया जा सकता है, और आप कार में जो फ्यूल डालते हैं वह इंजन को पॉवर देगा। इसमें मोटर और इंजन दोनों पहियों को पॉवर दे सकते हैं। यूजर्स के पास इसका कंट्रोल होता है कि उन्हें जब जैसी जरूरत हो तो वे आराम से मोड बदल सकते हैं। ड्राइविंग कंडीशन के आधार पर व्हील पावर इंजन और मोटर के बीच स्विच करता रहता है। टोयोटा, हुंडई, फोर्ड, होंडा, आदि जैसी कई कम्पनियां ऐसी कारें बनाती हैं, जो बहुत लोकप्रिय हैं।

सीरीज पैरेलल हाइब्रिड कारें

एक ही वाहन में सीरीज और पैरेलल हाइब्रिड आर्किटेक्चर दोनों के साथ आने वाली कारें भी मौजूद हैं। टोयोटा प्रियस जैसी कार में ऐसा सिस्टम मिलता है। इसमें यूजर या तो पूरी तरह इलेक्ट्रिक या पूरी तरह फ्यूल पर भी गाड़ी को चला सकते हैं।

भारत में कौन सी हाइब्रिड कारें उपलब्ध हैं?

भारत में चुनने के लिए बहुत सारे हाइब्रिड वाहन नहीं हैं, टोयोटा, सुजुकी, एमजी और होंडा जैसे निर्माता टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर और होंडा सिटी ईएचईवी जैसी कारों के साथ इस सेगमेंट आते हैं। वहीं लेक्सस और पोर्श जैसे अधिक महंगे विकल्प भी मौजूद हैं।

गणतन्त्र दिवस की झलकियाँ

"संस्कृत को छोड़कर आज भी किसी भी भारतीय भाषा का वाङ्मय विस्तार या मौलिकता में हिन्दी के आगे नहीं जाता।" - डॉ. सम्पूर्णानन्द

स्वामी विवेकानंद

अंजना भट्टाचार्य
पत्नी:-जयंत भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ था। उनका घर का नाम नरेंद्र दत्त था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। वे अपने पुत्र नरेंद्र को भी अंग्रेजी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर चलाना चाहते थे। नरेंद्र की बुद्दि बचपन से बड़ी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थी। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गए किंतु वहां उनके चित्त को संतोष नहीं हुआ।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेंद्र उनके पास पहले तर्क करने के विचार से ही गए थे। किंतु परमहंसजी ने देखते ही पहचान लिया कि ये तो वही शिष्य है जिसका उन्हें कई दिनों से इंतजार है। परमहंसजी की कृपा से इनको आत्म-साक्षात्कार हुआ। फलस्वरूप नरेंद्र परमहंसजी के शिष्यों में प्रमुख हो गए। सन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ। स्वामी विवेकानंद अपना जीवन अपने गुरूदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी को समर्पित कर चुके थे। गुरूदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटूम्ब की नाजुक हालत की परवाह किए बिना, स्वयं के भोजन की परवाह किए बिना गुरू सेवा में सतत हाजिर रहे। गुरूदेव का शरीर अत्यंत रूग्ण हो गया था। कैंसर के कारण गले में थूक, रक्त, कफ आदि निकलता था। इस सबकी सफाई वे खूब ध्यान से रखते थे। गुरू के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरू के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र दत्त ने गेरूआ वस्त्र पहन लिए। तत्पश्चात उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। सन 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद हो रही थी। स्वामी विवेकानंदजी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुंचे। यूरोप-अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहां लोगो ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला, किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। फिर तो अमेरिका में उनका बहुत स्वागत हुआ। वहां इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय

"आज का लेखक विचारों और भावों के इतिहास की वह कड़ी है जिसके पीछे शताब्दियों की कड़ियाँ जुड़ी है।" - माखनलाल चतुर्वेदी

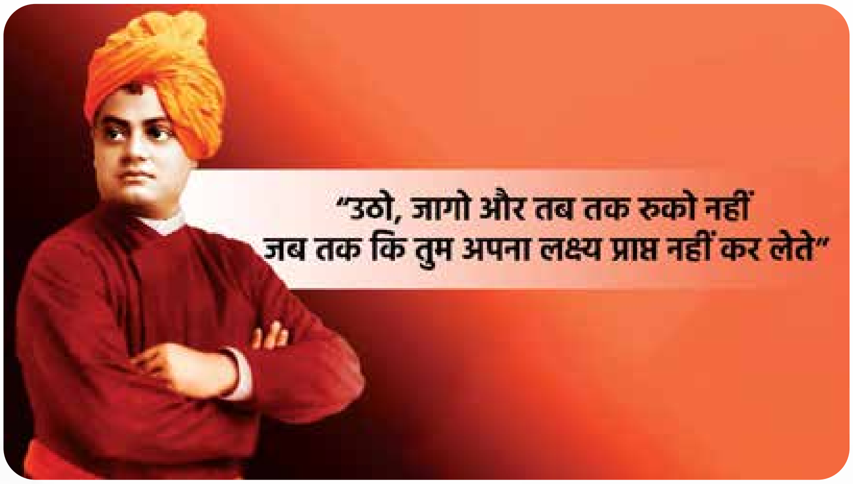

हो गया। तीन वर्ष तक वे अमेरिका में रहे और वहां लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अदभुत ज्योति प्रदान करते रहे। अध्यात्म-विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा यह स्वामी विवेकानंदजी का दृढ़ विश्वास था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित की। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।

स्वामी विवेकानंद भारत के एक हिंदू भिक्षु थे। उनकी शिक्षाएं और दर्शन हिंदू विचारों के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से शास्त्रीय योग और अद्वैत वेदांत का पुनर्व्याख्या और संश्लेषण है। उन्होंने धर्म को राष्ट्रवाद के साथ मिश्रित किया, और इस

पुनर्व्याख्या को शिक्षा, आस्था, चरित्र निर्माण के साथ-साथ भारत से संबंधित सामाजिक मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर लागू किया। उनका प्रभाव पश्चिम तक भी फैला और उन्होंने योग को पश्चिम में पेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी विवेकानंद ने मानवता को ऐसी राह दिखाई जो सभी धर्मों की एकता और परस्पर सम्मान पर आधारित है। स्वामीजी ने धर्म की बहुत सार्थक व्याख्या करते हुए कहा कि ईश्वर सभी प्राणियों

में है और ईश्वर की सेवा करनी है तो दुखी मनुष्यों और संकटग्रस्त जीवन-रूपो की सेवा करनी चाहिए। यही ईश्वर की वास्तविक उपासना है। स्वामी विवेकानंद पश्चिमी दर्शन सहित विभिन्न विषयों के ज्ञाता होने के साथ-साथ एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह भारत के पहले हिंदू सन्यासी थे, जिन्होंने हिंदू धर्म और सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया है। स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि युवा अधिक से अधिक संख्या में सामाजिक गतिविधियों में शामिल हो, जिससे न केवल समाज बेहतर बनेगा, बल्कि इससे व्यक्तिगत विकास भी होगा।

4 जुलाई 1902 को उन्होंने देह त्याग किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत का गौरव देश-देशांतरों में उज्जवल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया। वर्तमान में भारत के युवा जिस महापुरूष के विचारों को आदर्श मानकर उससे प्रेरित होते हैं, युवाओं के वे मार्गदर्शक और भारतीय गौरव हैं स्वामी विवेकानंद। भारत की गरिमा को वैश्विक स्तर पर सम्मान के साथ बरकरार रखने के लिए स्वामी विवेकानंद के कई उदाहरण इतिहास में मिलते हैं।

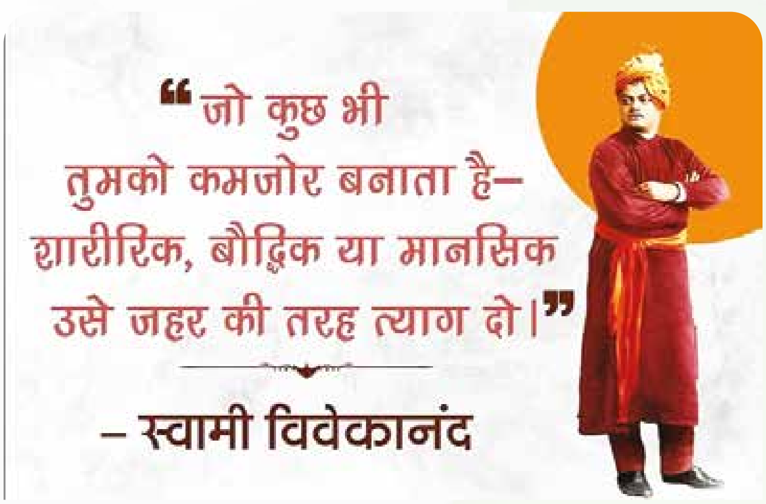

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी दुनिया को कैसे बदल देगी

जयंजन भट्टाचार्य
पिता : जयंत भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीनों के पास मौजूद वह बुद्धिमत्ता है जिसके तहत वे मानवीय सहायता से विभिन्न कार्य कर सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से मशीनें सीखने, समस्याओं को हल करने, चीजों की योजना बनाने, सोचने आदि में सक्षम होंगी। उदाहरण के लिए, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीनों द्वारा मानव बुद्धि का अनुकरण है। टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दिन-ब-दिन तेजी से विकसित हो रही है और माना जा रहा है कि निकट भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव जीवन में बहुत बड़ा बदलाव लाने वाली है और संभवत: दुनिया के सभी बड़े संकटों को सुलझाकर उन्हें खत्म कर देगी।

इस आधुनिक युग में हमारा जीवन काफ़ी हद तक कंप्यूटर पर निर्भर है। कंप्यूटर के बिना जीवन के बारे में सोचना लगभग असंभव है। हमें अपने दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली हर चीज़ में कंप्यूटर की आवश्यकता होती है। इसलिए कंप्यूटर को बुद्धिमान बनाना बहुत जरूरी हो जाता है ताकि हमारा जीवन आसान हो जाए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर का सिद्धांत और विकास है, जो मानव बुद्धि और इंद्रियों, जैसे दृश्य धारणा, भाषण मान्यता, निर्णय लेने और भाषाओं के बीच अनुवाद का अनुकरण करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने टेक्नोलॉजी की दुनिया में क्रांति ला दी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुप्रयोग : स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। कंपनियाँ ऐसी तकनीकें विकसित करने का प्रयास कर रही हैं जो त्वरित निदान की अनुमति देगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव निरीक्षण की आवश्यकता के बिना रोगियों पर काम करने में सक्षम होगा। प्रौद्योगिकी पर आधारित सर्जिकल प्रक्रियाएं पहले से ही की जा रही हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से हमारा काफी समय बचेगा। रोबोट के प्रयोग से मानव श्रम में कमी आएगी। उदाहरण के लिए, उद्योगों में रोबोट का उपयोग किया जाता है जिससे मानव प्रयास और समय की काफी बचत होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बहुत प्रभावी होने की क्षमता रखता है। यह छात्रों को पढ़ाने के नवीन तरीके ला सकता है जिसकी मदद से छात्र अवधारणाओं को बेहतर ढंग से सीख सकेंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नवीन प्रौद्योगिकी का भविष्य है क्योंकि हम इसका उपयोग कई क्षेत्रों में कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इसका उपयोग सैन्य क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, ऑटोमोबाइल आदि में किया जा सकता है। आने वाले वर्षों में, हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के और अधिक अनुप्रयोग देख पाएंगे क्योंकि यह तकनीक दिन-ब-दिन विकसित हो रही है।

विपणन : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विपणक को उपभोक्ताओं और संभावित ग्राहकों के बारे में गहन जानकारी प्रदान करता है और उन्हें सही समय पर जानकारी देने में सक्षम बनाता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समाधानों के माध्यम से, विपणक अपने अभियानों और रणनीतियों को परिष्कृत कर सकते हैं।

कृषि : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का उपयोग पौधों में बीमारियों, कीटों और खराब पौधों के पोषण का पता लगाने के लिए किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से किसान मौसम की स्थिति, तापमान, पानी के उपयोग और मिट्टी की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं।

"मैं मानती हूँ कि हिंदी प्रचार से राष्ट्र का ऐक्य जितना बढ़ सकता है वैसा बहुत कम चीजों से बढ़ सकेगा।" - लीलावती मुंशी

बैंकिंग: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समाधानों के माध्यम से धोखाधड़ी वाली गतिविधियों का पता लगाया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बॉट, डिजिटल भुगतान सलाहकार उच्च गुणवत्ता वाली सेवा बना सकते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जटिल चिकित्सा डेटा के विश्लेषण, निदान और जटिलता में मानव अनुभूति को पार कर सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इतिहास : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक नई तकनीक लग सकती है लेकिन अगर हम थोड़ा शोध करें तो पाएंगे कि इसकी जड़ें अतीत में बहुत गहरी हैं। ग्रीक पौराणिक कथाओं में कहा जाता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणाओं का उपयोग पहले ही किया गया था।

कृत्रिम न्यूरॉन्स का मॉडल पहली बार 1943 में वॉरेन मैककुलोच और वाल्टर पिट्स द्वारा सामने लाया गया था। सात साल बाद 1950 में एलन ट्यूरिंग द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित एक शोध पत्र प्रकाशित किया गया जिसका शीर्षक था ''कंप्यूटर मशीनरी और इंटेलिजेंस''। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शब्द पहली बार 1956 में जॉन मैकार्थी द्वारा गढ़ा गया था, जिन्हें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक के रूप में जाना जाता है।

हम कह सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दुनिया का भविष्य होगा। विशेषज्ञों के अनुसार, हम इस तकनीक से खुद को अलग नहीं कर पाएंगे क्योंकि यह जल्द ही हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इस दुनिया में हमारे जीने के तरीके को बदल देगा। यह तकनीक क्रांतिकारी साबित होगी क्योंकि यह हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देगी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार : क्षमताओं और कार्यप्रणाली के आधार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टाइप-1
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टाइप-2

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टाइप -1 :

संकीर्ण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कमजोर एआई): इसे बुद्धिमत्ता के साथ एक विशिष्ट कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे कमजोर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहा जाता है क्योंकि यह अपनी सीमाओं से परे प्रदर्शन नहीं कर सकता है। इसे किसी विशिष्ट कार्य को करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। नैरो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कुछ उदाहरण चेहरे की पहचान (एप्पल फोन में सिरी), भाषण और छवि पहचान हैं। आईबीएम का वॉटसन सुपरकंप्यूटर, सेल्फ-ड्राइविंग कारें, शतरंज खेलना और समीकरण हल करना भी कमजोर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कुछ उदाहरण हैं।

सामान्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एजीआई या मजबूत एआई) : यह प्रणाली लगभग हर संज्ञानात्मक कार्य को उतनी ही कुशलता से कर सकती है जितनी मनुष्य कर सकते हैं। सामान्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मुख्य विशेषता एक ऐसा सिस्टम बनाना है जो एक इंसान की तरह खुद सोच सके। ऐसी मशीनें बनाना कई शोधकर्ताओं का दीर्घकालिक लक्ष्य है।

सुपर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : सुपर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक प्रकार की सिस्टम इंटेलिजेंस है जिसमें मशीनें मानव बुद्धि से आगे निकल सकती हैं और किसी भी संज्ञानात्मक कार्य को मनुष्यों से बेहतर तरीके से कर सकती हैं। मजबूत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मुख्य विशेषताएं सोचने, तर्क करने, पहेलियाँ सुलझाने, निर्णय लेने, योजना बनाने और स्वयं संवाद करने की क्षमता होगी। मजबूत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का निर्माण मानव इतिहास की सबसे बड़ी क्रांति हो सकती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टाइप-2

रिएक्टिव मशीनें : ये मशीनें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मूल प्रकार हैं। ऐसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम केवल वर्तमान स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और सर्वोत्तम संभव कार्रवाई के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं। वे भविष्य के कार्यों के लिए यादें संग्रहीत नहीं करते हैं। आईबीएम का गहरा नीला सिस्टम और गूगल का अल्फा गो प्रतिक्रियाशील मशीनों के उदाहरण हैं।

सीमित मेमोरी : ये मशीनें थोड़े समय के लिए डेटा या पिछली यादों को स्टोर कर सकती हैं। उदाहरण स्व-चालित कारें हैं। वे पास की कारों की सड़क, गति और दूरी को नेविगेट करने के लिए जानकारी संग्रहीत कर सकते हैं।

मन का सिद्धांत : ये प्रणालियाँ मनुष्यों की तरह भावनाओं, विश्वासों और आवश्यकताओं को समझती हैं। इस प्रकार की मशीनों का अभी भी आविष्कार नहीं हुआ है और शोधकर्ताओं के लिए इसे बनाना एक दीर्घकालिक लक्ष्य है।

आत्म-जागरूकता: आत्म-जागरूकता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य है। ये मशीनें इंसानों को मात दे सकती हैं। यदि इन मशीनों का आविष्कार हो जाए तो यह मानव समाज में क्रांति ला सकती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव जाति के इतिहास में एक बड़ी क्रांति लाएगा। मानव सभ्यता कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ मानव बुद्धि को बढ़ाकर फलेगी-फूलेगी, जब तक हम प्रौद्योगिकी को लाभकारी बनाए रखने का प्रबंधन करते हैं।

पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलकियाँ

"साहित्य की सेवा भगवान का कार्य है, आप काम में लग जाइए आपको भगवान की सहायता प्राप्त होगी और आपके मनोरथ परिपूर्ण होंगे।" - चंद्रशेखर मिश्र

"भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं।" – अरविंद

दिनांक : 8 मार्च, 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

मुख्यालय आईओएम दिनांक 05.03.2025 एवं कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के आदेश संख्या 521 के संदर्भ में, 8 मार्च, 2025 को कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सम्मेलन हॉल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सफलतापूर्वक मनाया गया। प्रारंभ में, क्षेत्रीय प्रमुख महोदय ने सम्मानित अतिथि, माननीया श्रीमती इंद्राणी घोष, मुख्य आहार विशेषज्ञ, मणिपाल अस्पताल, साल्ट लेक, सहकर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों का स्वागत किया। फिर उन्होंने श्रीमती घोष को भाषण देने का अनुरोध किया। श्रीमती घोष ने नियमित भोजन की आदतों के साथ-साथ उनके पोषण मूल्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने दैनिक पानी की सीमा का सेवन एवं पौष्टिक रूप से मूल्य वर्धित खाद्य पदार्थों के सेवन के माध्यम से मानव शरीर में विभिन्न विटामिन और खनिजों के अवशोषण एवं नियमित व्यायाम के लाभों पर भी जोर दिया। सभी अधिकारी उनकी बात को अत्यंत ध्यान से सुन रहे थे एवं बाद में इंटरैक्टिव सत्र में शामिल हुए। अंत में, क्षेत्रीय प्रमुख महोदय ने सरल शब्दों में अपना भाषण देने के लिए श्रीमती इंद्राणी घोष को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के दौरान, हमारे दैनिक जीवन में महिलाओं के प्रभाव को फिर से देखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व पर एक वीडियो भी चलाया गया था। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में, क्षेत्रीय प्रमुख महोदय ने महिलाओं के प्रयासों एवं उपलब्धियों की सराहना करते हुए एक मुख्य भाषण दिया। उन्होंने हमारे सम्मानित अतिथि माननीया अधिवक्ता श्रीमती पोएट्री दत्ता, कोलकाता उच्च न्यायालय का स्वागत किया। इसके बाद, माननीय अधिवक्ता श्रीमती पोएट्री दत्ता ने महिलाओं के सामाजिक जीवन और समाज में उनके योगदान पर प्रकाश डालते हुए एक संक्षिप्त भाषण दिया। इसके बाद प्रतिभागियों ने हमारे अतिथि के साथ प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया। महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालने के लिए एक आध्यात्मिक वीडियो भी चलाया गया। अंत में, श्री जयंत भट्टाचार्य, वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी) ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सम्मानित अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

प्रथम सत्र

सम्मानित अतिथि, श्रीमती इंद्राणी घोष, मुख्य आहार विशेषज्ञ, मणिपाल अस्पताल, साल्ट लेक

द्वितीय सत्र

सम्मानित अतिथि माननीया अधिवक्ता श्रीमती पोएट्री दत्ता, कोलकाता उच्च न्यायालय

"संस्कृत की इशाअत (प्रचार) का एक बड़ा फायदा यह होगा कि हमारी मुल्की जबान (देशभाषा) वसीअ (व्यापक) हो जायगी।" – मौलवी महमूद अली

योग दिवस

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने 29 जुलाई, 2024 को बिधाननगर म्यूनिसिपल स्कूल, सॉल्ट लेक में छात्रों के लिए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह के तहत हडको सीएसआर पहल के तहत एक योग सत्र का आयोजन किया। इसके बाद बिधाननगर म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन (BMC) के सहयोग से #एक_पेड़_माँ_के_नाम और #Plant4Mother अभियान के तहत एक वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ बिधाननगर म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन की माननीय महापौर द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद बिधाननगर म्यूनिसिपल स्कूल के छात्रों द्वारा उद्घाटन गीत प्रस्तुत किया गया। कोलकाता के क्षेत्रीय प्रमुख श्री देबेश चक्रवर्ती ने इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित माननीय महापौर श्रीमती कृष्णा चक्रवर्ती का स्वागत किया। इस अवसर पर बिधाननगर म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के नगर आयुक्त श्री सुजय सरकार (आईएएस), संयुक्त नगर आयुक्त श्री प्रदीप आचार्य, कार्यकारी अभियंता श्री उज्ज्वल कांति करन, बिधाननगर म्यूनिसिपल स्कूल की प्राचार्या श्रीमती भास्वती चक्रवर्ती और वर्ल्ड योगा सोसाइटी के प्रोफेसर पार्थ साहा जैसे विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

कोलकाता के क्षेत्रीय प्रमुख ने स्वागत भाषण में हडको की देशव्यापी गतिविधियों और राज्य सरकार के समर्थन को हडको की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में स्वीकार करते हुए सभा को संबोधित किया।

उद्घाटन कार्यक्रम के बाद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। माननीय महापौर, नगर आयुक्त और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने स्कूल परिसर में #एक_पेड़_माँ_के_नाम और #Plant4Mother अभियान के तहत पौधारोपण किया।

इसके बाद वर्ल्ड योगा सोसाइटी के प्रतिष्ठित योग विशेषज्ञों द्वारा स्कूल के सामान्य हॉल में आठवीं कक्षा के लगभग 250 छात्रों के लिए चार समूहों में एक दो घंटे का इंटरएक्टिव योग सत्र आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न आसन, मुद्राएं और श्वसन क्रियाओं का प्रदर्शन और व्याख्या की गई। इस सत्र का उद्देश्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योग के लाभों पर ध्यान केंद्रित करना था।

बिधाननगर म्यूनिसिपल स्कूल में आयोजित योग जागरूकता कार्यक्रम छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी रहा, जिसने योग के प्रति उनकी समझ को प्रोत्साहित किया। छात्रों और स्कूल प्राधिकरण की सक्रिय भागीदारी और प्रशंसा ने इस कार्यक्रम की सफलता को रेखांकित किया। कार्यक्रम की तस्वीरें और प्रेस कतरन संलग्न हैं।

"संसार में देश के नाम से भाषा को नाम दिया जाता है और वही भाषा वहाँ की राष्ट्रभाषा कहलाती है।" - ताराचंद्र दूबे

"साहित्य पढ़ने से मुख्य दो बातें तो अवश्य प्राप्त होती हैं, अर्थात् मन की शक्तियों को विकास और ज्ञान पाने की लालसा।" – बिहारीलाल चौबे

"जो गुण साहित्य की जीवनी शक्ति के प्रधान सहायक होते हैं उनमें लेखकों की विचार-शीलता प्रधान है।" - नरोत्तम व्यास

"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।"
– मैथिलीशरण गुप्त

हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में 14/09/2024 से 29/09/2024 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाए जाने के संबंध में रिपोर्ट।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 14 से 29 सितंबर 2024 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर श्री देवेश चक्रवर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) की अध्यक्षता में दिनांक 14/09/2024 से 29/09/2024 के दौरान राजभाषा कार्यशाला एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी 2024 में राजभाषा पखवाड़ा का शुभारंभ और इसके अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर कार्यालय में दिनांक 15-09-2024 को मुख्य द्वार पर राजभाषा का बैनर लगाया गया। राजभाषा पखवाड़ा का शुभारंभ दिनांक 16-09-2024 को क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें कार्यालय के लगभग सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया कि पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के सभी कार्य हिंदी में किए जाएं तथा सभी नोटिंग कार्य हिंदी में लिखे जाएं।

क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) महोदय ने नोडल अधिकारियों को निर्देश दिया कि राजभाषा पखवाड़ा 2024 के दौरान अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाए, और हिंदी से संबंधित प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारियों की भागीदारी सुनिश्चित हो।

तदनुसार, इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ताकि कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी के बीच हिंदी में कार्य करने के प्रति उत्साह बढ़े और हिंदी के प्रति उनकी जानकारी और दृष्टि की समीक्षा हो सके।

राजभाषा पखवाड़ा का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है :-

1	श्री देवेश चक्रवर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)	अध्यक्ष
2	श्री विक्टर भट्टाचार्जी, संयुक्त महाप्रबंधक (आईटी)	सदस्य
3	श्री समीक बोस, संयुक्त महाप्रबंधक (ई)	सदस्य
4	डॉ. तुषार कुमार सिन्हा, उप महाप्रबंधक (आईटी) सह-हिंदी नोडल अधिकारी	सदस्य
5	श्री अभिजीत चक्रवर्ती, सहायक महाप्रबंधक (परियोजना)	सदस्य
6	श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्जी, सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)	सदस्य
7	श्री जयंत भट्टाचार्य, वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)	सदस्य
8	श्रीमती देवजानी मोहरार, वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)	सदस्य
9	श्री वरुण कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)	सदस्य
10	श्रीमती इशिता मंडल, वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)	सदस्य
11	श्री राजेंद्र कुमार बेहरा, प्रबंधक (वित्त)	सदस्य
12	सुश्री अर्चिता दत्त, प्रबंधक (वित्त)	सदस्य
13	श्री स्वरूप दास, प्रबंधक (आईटी) सह-हिंदी नोडल सहायक	सदस्य
14	सुश्री नवनीता पाल, सहायक प्रबंधक (सचिवीय)	सदस्य
15	श्री स्वपन चंद्र पॉल, सहायक ग्रेड- I	सदस्य
16	श्री द्रुपद कुमार प्रुस्टी, सहायक कार्यकारी (वित्त)	सदस्य
17	श्री संजय कुमार घोष, चौकीदार	सदस्य
18	श्री चिरंजीव कर्मकार, एएफ	सदस्य

"वास्तव में वेश, भाषा आदि के बदलने का परिणाम यह होता है कि आत्मगौरव नष्ट हो जाता है, जिससे देश का जातित्व गुण मिट जाता है।" – सैयद अमीर अली मीर

अध्यक्ष महोदय, श्री देवेश चक्रवर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी), हडको की अनुमति से डॉ. तुषार कुमार सिन्हा, उप महाप्रबंधक (आईटी) और हिंदी नोडल अधिकारी ने सबसे पहले राजभाषा माह के अवसर पर आयोजित बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। इसके पश्चात, हिंदी नोडल अधिकारी ने अध्यक्ष महोदय से राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित बैठक की कार्यवाही प्रारंभ करने की अनुमति प्राप्त की। अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए जुलाई-सितंबर त्रैमासिक में कार्यालय में हिंदी उपयोग और प्रगति तथा प्रतिशतता की जानकारी सभी कर्मचारियों को दी और आग्रह किया कि वे राजभाषा पखवाड़ा 2024 के आयोजन के अवसर पर राजभाषा के उपयोग और उसके प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए अपने मन और स्वेच्छा से यह संकल्प लें कि वे राजभाषा पखवाड़ा के उद्देश्यों को पूरा करने में अपना पूर्ण सहयोग देंगे और राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए कार्यालय के कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का उपयोग करेंगे।

अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को अवगत कराया कि यद्यपि हमारा कार्यालय "ग" क्षेत्र में आता है, तथापि हमें प्राप्त हिंदी उपयोग और पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करना आवश्यक है, जिसके लिए हमें हिंदी भाषा के प्रति स्वेच्छा से रुचि रखनी होगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब सभी अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा के प्रचार-प्रसार और प्रगति को बढ़ाना अपना दायित्व समझेंगे, तभी वे हिंदी के कार्यों को बढ़ाने हेतु पूर्ण समर्पित भावना से कार्य करेंगे।

इस अवसर पर कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में निम्नलिखित कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं:

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा के दौरान कार्यालय

क्रमांक	कार्यक्रम/प्रतियोगिता का नाम	तारीख
(i)	हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता	17/09/2024
(ii)	हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता	18/09/2024
(iii)	हिंदी टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता	20/09/2024
(iv)	हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता	23/09/2024
(v)	हिंदी लघु भाषण प्रतियोगिता	24/09/2024

के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच उपर्युक्त प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं का विस्तृत विवरण इस प्रकार है:

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर दिनांक 17/09/2024 एवं 18/09/2024 को कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच हिंदी निबंध लेखन एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य कार्यालय कर्मचारियों के बीच हिंदी लेखन का ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति रुचि को बढ़ाना था। उक्त प्रतियोगिता में शब्दों को हिंदी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिंदी में रूपांतरित करना था, जिसका मुख्य उद्देश्य कार्यालय के कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी-अंग्रेजी शब्द-परिवर्तन क्षमता को प्रोत्साहित करना था।

"स्वदेशप्रेम, स्वधर्मभक्ति और स्वावलंबन आदि ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए।" - रामजी लाल शर्मा

क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर दिनांक 20/09/20249 23/09/2024 एवं 24/09/2024 को हिन्दी टिप्पण लेखनए पत्र लेखन एवं आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों ने उत्साहपर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य कार्यालय कर्मियों के मध्य हिन्दी लेखन का ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ राजभाड्ढा के प्रति रुची, जागरूकता को बढ़ाना एवं उत्साहवर्धन करना था।

दिनांक 26/09/2024 को क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर हिन्दी कार्यान्वेयन समिति की बैठक अयोजित की गई थी। उक्त बैठक में श्री निर्मल दुबे, निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, निजाम पैलेस, कोलकाता को बतौर आमंत्रित अतिथि के रूप में कार्यशाला के लिये आमंत्रित किया गया था। उन्होंने बैठक में भाग लिया एवं सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय, हिन्दी नोडल अधिकारी एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने आमंत्रण पर धन्यवाद दिया तथा बैठक के दौरान वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैशविक स्तर पर विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं इसकी बढ़ती महता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। महोदय हिंदी भाषा के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने दुस्साध्य शब्दों में न जाने की सलाह दी, इसके बजाय आधिकारिक नोट में सरल शब्दों का उपयोग करने से अगले व्यक्ति के लिए विषय को समझना आसान हो जाता है। हिन्दी नोडल अधिकारी कार्याशाला के अवसर पर अतिथि महोदय को कर्यालय में आयोजित विभन्न प्रतियागितओं के बारे में जानकारी दी।

राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर दिनांक 27/09/2024 को भी क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में श्री राजेश शॉड प्रबंधक राजभाषा) कोल इंडिया लिमिटेड, न्यू टाउन, राजारहाट, कोलकाता को कार्यशाला में संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने कार्यशाला में भाग लिया एवं सर्वप्रवम अध्यक्ष महोदय, हिन्दी नोडल अधिकारी एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने आमंत्रण पर धन्यवाद दिया तथा कार्यशाला के दौरान महोदय ने विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं इसकी बढ़ती महता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कार्यालय में हिंदी का माहौल कैसे बनाया जाए एवं कार्यालय में हिंदी में कामकाज के लिए अनुवादक के उपयोग के विभिन्न रूपों को भी प्रदर्शित किया। उन्होंने यह भी सरल रूप में प्रदर्शित किया है की सरकारी कामकाज में हिंदी कार्यों को कैसे बढ़ाया जा सकता है।

राजभाषा पखवाड़ा के समापन समारोह में हिंदी के विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने एवं पुरस्कृत पतिभागियों नामों की घोषणा की गयी। उपर्युक्त बैठकों में अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्यों को भाग लेने तथा गुणात्मक सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन किया लया, तत्पश्चात बैठको का समापन किया गया।

"वैज्ञानिक विचारों के पारिभाषिक शब्दों के लिये, किसी विषय के उच्च भावों के लिये, संस्कृत साहित्य की सहायता लेना कोई शर्म की बात नहीं है।" - गणपति जानकीराम दूबे

स्वच्छता अभियान

विषय: "स्पेशल कैंपेन 4.0 - स्वच्छता ही सेवा" के तहत स्वच्छता अभियान (17.09.2024 से 02.10.2024) HUDCO, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित – सीटीयू (ब्लैक स्पॉट) पर की गई कार्रवाई की रिपोर्ट

मुख्यालय के ईमेल दिनांक 16/09/2024 के अनुसार, केआरओ ने कार्यालय परिसर के पास के सीटीयू (ब्लैक स्पॉट) की पहचान कर ली थी, जो करुणामयी क्रॉसिंग, सॉल्ट लेक, कोलकाता और आइलैंड (टैंक नंबर 9) के बीच स्थित है। इसके संदर्भ में 19/09/2024 को आईओएम भेजा गया था। स्वच्छता अभियान को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए, केआरओ के अधिकारियों ने बिधाननगर नगर निगम (बीएमसी) से अनुमति और सहयोग का अनुरोध किया और पास के नगर पार्क, जैसे कि सीजे पार्क, सॉल्ट लेक में सफाई अभियान और पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई।

आवश्यक सहमति और बीएमसी के समर्थन प्राप्त करने के बाद, केआरओ ने स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण कार्यक्रम को पूरा किया।

कार्यक्रम प्रारंभ से पूर्व:

17/09/2024 को, क्षेत्रीय प्रमुख (आरसी) ने "स्वच्छता शपथ" दिलाई और केआरओ अधिकारियों को सफाई, स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक किया।

कार्यक्रम का विवरण:

- तारीख: 21/09/2024
- समय: प्रातः 09:30 बजे
- स्थान: केआरओ कार्यालय परिसर

इस दिन, केआरओ के सभी अधिकारी कार्यालय परिसर में एकत्र हुए। आरसी के नेतृत्व में टीम ने "स्वच्छता" के बैनर और पोस्टरों के साथ एक जुलूस निकाला, जो आइलैंड (टैंक नंबर 9) से करुणामयी क्रॉसिंग (पहले से तय ब्लैक स्पॉट) तक गया। टीम ने करुणामयी क्रॉसिंग से आइलैंड (टैंक नंबर 9) के बीच फुटपाथ और पथों की सफाई की। राहगीरों और कार्यालय जाने वालों ने भी पुलिस कर्मियों के साथ अभियान में सहयोग किया। रास्ते में, केआरओ अधिकारियों ने अपने कार्यालय परिसर के आस-पास के फुटपाथ की भी सफाई की।

इसके बाद, HUDCO टीम ने सीजे पार्क, सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता में स्थानीय निवासियों की भागीदारी के साथ सफाई और वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया।

क्र.	मुख्यालय के निर्देश	क्षेत्रीय कार्यालय की अनुपालन
1	स्वच्छता गतिविधियों की तस्वीरें अपलोड करें (चयनित ब्लैक स्पॉट के संदर्भ में)	संलग्न
2	कार्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या (नगर निगम के अधिकारियों सहित)	आरसी के नेतृत्व में केआरओ के सभी अधिकारी, संविदा कर्मचारी और प्रबंधन प्रशिक्षु (कुल 25 लोग) ने भाग लिया। साथ ही, कार्यालय जाने वाले, राहगीर, पुलिस कर्मी और स्थानीय निवासी भी शामिल हुए।
3	एकत्रित कचरे की मात्रा	स्वच्छता अभियान के दौरान लगभग 100 किलोग्राम कचरा एकत्र किया गया, जिसे कार्यालय परिसर में रखा गया और बाद में बिधाननगर एमसी को पूर्व व्यवस्था के तहत सौंपा गया।
4	कचरे का निपटान कैसे किया गया	बिधाननगर एमसी के सफाई कर्मचारी ने कचरे को HUDCO परिसर से ट्रक में एकत्र कर निपटान किया।

कार्यक्रम का समापन:

कार्यक्रम के अंत में, क्षेत्रीय प्रमुख ने स्थानीय प्रशासन (बीएमसी) और उपस्थित स्थानीय निवासियों को इतनी सहजता से अभियान में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

स्वच्छता अभियान के तहत अन्य गतिविधियों की रिपोर्ट अलग से भेजी जा रही है।

"हिंदुस्तान के लिये देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नहीं सकता।" – महात्मा गाँधी

"भारतवर्ष के लिये देवनागरी साधारण लिपि हो सकती है और हिंदी भाषा ही सर्वसाधारण की भाषा होने के उपयुक्त है।" - शारदाचरण मित्र

"यह महात्मा गाँधी का प्रताप है, जिनकी मातृभाषा गुजराती है पर हिंदी को राष्ट्रभाषा जानकर जो उसे अपने प्रेम से सींच रहे हैं।" - लक्ष्मण नारायण गर्दे

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

मुख्यालय के पत्र दिनांक 30.09.2024 के अनुसार, सतर्कता जागरूकता सप्ताह (VAW) का आयोजन 28 अक्टूबर, 2024 से 3 नवंबर, 2024 तक HUDCO क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में किया गया। यह सप्ताह इस वर्ष की थीम "राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति" पर आधारित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श के उद्देश्य से मनाया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कर्मचारियों ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है:

1. शपथ ग्रहण कार्यक्रम:

28.10.2024 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ क्षेत्रीय प्रमुख (आरसी) श्री देबेश चक्रवर्ती के परिचयात्मक भाषण के साथ हुआ। इसके बाद, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने सुबह 11 बजे सतर्कता शपथ ली।

आरसी ने बताया कि यह सप्ताह भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के साथ मेल खाता है, जो राष्ट्रीय समृद्धि में सतर्कता की भूमिका को रेखांकित करता है। उन्होंने यह भी बताया कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) की भागीदारी आधारित सतर्कता पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार के खिलाफ सभी हितधारकों को एकजुट करना है।

इस आयोजन का उद्देश्य शासन में नैतिकता और पारदर्शिता के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना है।

आरसी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समन्वयन किया और सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों/कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रत्येक कर्मचारी से इसमें भाग लेने का अनुरोध किया ताकि सप्ताह का वास्तविक उद्देश्य यानी सतर्कता जागरूकता और निवारक सतर्कता गतिविधियों को प्राप्त किया जा सके।

सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

(आगे की गतिविधियों का विवरण जोड़ा जा सकता है।)

HUDCO, KRO के मुख्य प्रवेश द्वार पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 का बैनर प्रदर्शित किया गया।

केआरओ के कर्मचारियों ने शपथ ली।

केआरओ के कर्मचारी उद्घाटन सत्र में उपस्थित।

"विचारों का परिपक्व होना भी उसी समय संभव होता है, जब शिक्षा का माध्यम प्रकृति-सिद्ध मातृभाषा हो।" - पं. गिरधर शर्मा

2. कोलकाता आरओ द्वारा वॉकेथॉन का आयोजन:

28.10.2024 को कोलकाता आरओ द्वारा एक वॉकेथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय प्रमुख (आरसी) और कोलकाता आरओ के सभी अधिकारियों ने भाग लिया। यह वॉकेथॉन केआरओ कार्यालय परिसर से करुणामयी क्रॉसिंग/मेट्रो स्टेशन तक आयोजित की गई। प्रतिभागियों ने अपने हाथों में भ्रष्टाचार विरोधी रंगीन पोस्टर लिए हुए थे।

"किसी देश में ग्रंथ बनने तक वैदेशिक भाषा में शिक्षा नहीं होती थी। देश भाषाओं में शिक्षा होने के कारण स्वयं ग्रंथ बनते गए हैं। - साहित्याचार्य रामावतार शर्मा।

3. विक्रेताओं के साथ ऑनलाइन बैठक:

30.10.2024 को कोलकाता आरओ द्वारा विक्रेताओं के साथ एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान विक्रेताओं से अनुरोध किया गया कि यदि उन्हें भुगतान या HUDCO से संबंधित किसी अन्य प्रकार की समस्या हो, तो वे सीधे कार्यालय से संपर्क करें या शिकायत बॉक्स (जो रिसेप्शन पर रखा गया है) में लिखित शिकायत जमा करें। इसके अलावा, केआरओ के विक्रेताओं से ऑनलाइन ईमानदारी शपथ भी ली गई।

4. जनता/नागरिकों के लिए आउटरीच गतिविधियाँ:

सीवीसी के निर्देशानुसार, कोलकाता आरओ ने सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता के "लाबन ह्रद विद्यालय" (एक राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित विद्यालय) के छात्रों के बीच निबंध लेखन और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस वर्ष की थीम "राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति" पर आधारित इन प्रतियोगिताओं में छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अंत में, विभिन्न श्रेणियों में विजेताओं को कोलकाता आरओ द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

लाबन ह्रद विद्यापीठ, सॉल्ट लेक, कोलकाता के छात्रों के बीच निबंध लेखन और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन

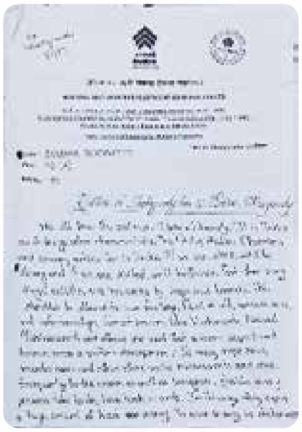

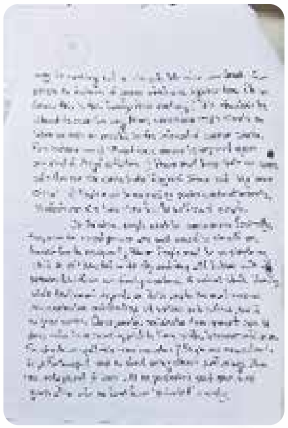

लाबन ह्रद विद्यापीठ, सॉल्ट लेक, कोलकाता के छात्रों द्वारा बनाए गए पोस्टर/निबंध।

"जो भाषा सामयिक दूसरी भाषाओं से सहायता नहीं लेती वह बहुत काल तक जीवित नहीं रह सकती।" - पांडेय रामवतार शर्मा

5. सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान विशेष सत्र:

29.10.2024 को केआरओ सम्मेलन कक्ष में एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अमिताभ चक्रवर्ती, अतिरिक्त महाप्रबंधक (वाणिज्य), भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल), सॉल्ट लेक, कोलकाता को आमंत्रित किया गया। आरसी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि ने अपने व्याख्यान में इस वर्ष की थीम "राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति" पर चर्चा की। उन्होंने ईमानदारी की संस्कृति को ईमानदारी, जवाबदेही और नैतिक सिद्धांतों का पर्याय बताया और इसे संस्थानों और व्यक्तियों के लिए समृद्ध वातावरण तैयार करने का माध्यम बताया।

6. केआरओ कर्मचारियों के बीच इन-हाउस प्रतियोगिताएँ:

(क) निबंध लेखन प्रतियोगिता:

28.10.2024 को कोलकाता आरओ द्वारा सभी कर्मचारियों के लिए एक निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसका विषय "राष्ट्र की समृद्धि के लिए ईमानदारी की संस्कृति" था। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया।

(ख) क्विज प्रतियोगिता:

28.10.2024 को केआरओ द्वारा कर्मचारियों के लिए एक क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। सभी कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

केआरओ के कर्मचारी निबंध लेखन प्रतियोगिता और क्विज प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।

7. क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के अधिकारियों द्वारा इन-हाउस प्रस्तुतियाँ:

सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्य योजना के तहत, केआरओ सम्मेलन कक्ष में कई इन-हाउस प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। इन सत्रों में अधिकारियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए:

क्र.	विषय	प्रस्तुति देने वाले अधिकारी
1	साइबर स्वच्छता और सुरक्षा	श्री वी. भट्टाचार्य (जेजीएम, आईटी) और श्री जे. भट्टाचार्य (एसएम, आईटी)
2	प्रणालीगत सुधार उपायों की पहचान और क्रियान्वयन	श्री टी.के. सिन्हा (डीजीएम, आईटी) और श्री वी.के. सिंह (एसएम, प्रशासन)
3	एचक्यू/आरओ के सर्कुलर/दिशानिर्देश/ मैनुअल का भौतिक और ई-सिस्टम में रखरखाव	श्री चक्रवर्ती (एजीएम, पी) और श्रीमती डी. मोहरार (एसएम, एस)
4	HUDCO वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी की समीक्षा और अपडेट पर चर्चा	श्री एस. दास (एम, आईटी) और श्री ए. दत्ता (एम, एफ)

8. मूल्यांकन और पुरस्कार वितरण:

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन केआरओ कर्मचारियों के बीच पुरस्कार वितरण सत्र के साथ हुआ। इस अवसर पर आरसी ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील की कि वे अपने कार्यों के दौरान सभी नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करें और ईमानदारी और पारदर्शिता के उच्चतम मानकों को अपनाएं।

आईपीजीएमईआर, कोलकाता में चिकित्सा उपकरणों की खरीद और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए हडको सीएसआर सहायता।

योजना का नाम: आईपीजीएमईआर, कोलकाता में चिकित्सा उपकरणों की खरीद और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए हडको सीएसआर सहायता।

एजेंसी: पश्चिम बंगाल राज्य स्वास्थ्य और परिवार कल्याण समिति (डब्ल्यूबीएसएचएंडएफएस), पश्चिम बंगाल सरकार।

कार्यान्वयन एजेंसी: पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च संस्थान (आईपीजीएमईआर), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार

स्वीकृत सीएसआर अनुदान सहायता: 93.93 लाख रुपये

जारी की गई सीएसआर अनुदान सहायता: 86.05 लाख रुपये

पश्चिम बंगाल सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च संस्थान (आईपीजीएमईआर) में चिकित्सा उपकरणों की खरीद और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए हडको सीएसआर अनुदान राशि 93.93 लाख रुपये मंजूर की गई है। आईपीजीएमईआर चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए कार्यान्वयन एजेंसी है, जैसे कि एनेस्थीसिया मशीन विद वेपोराइजर, सी-एआरएम ओटी टेबल, लो टेम्परेचर गैस प्लाज्मा स्टेरिलाइजेशन सिस्टम, माइनर ओटी टेबल, एनसीवी_ईएमजी_ईओ (पोर्टेबल), ट्रॉली क्रैश कार्ट और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट। आईपीजीएमईआर चिकित्सा शिक्षा और रोगी देखभाल सेवाओं दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए 86,04,837.00 रुपये की सीएसआर अनुदान सहायता प्रदान की गई है।

यह अस्पताल 100 से अधिक वर्षों से सेवाएं प्रदान कर रहा है। यह अस्पताल राज्य और पूर्वी भारत के पड़ोसी राज्यों के आम लोगों के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए सभी उपचार निःशुल्क प्रदान करता है।

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईपीजीएमईआर) में चिकित्सा उपकरण और बुनियादी ढांचे के विकास की तस्वीरें

एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन SDLD1

एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन वुडबर्न

ओटी टेबल यूरोलॉजी 1

एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन यूरोलॉजी 2

ओटी टेबल यूरोलॉजी 2

"आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी न होनी चाहिए।" - महावीर प्रसाद द्विवेदी

योजना का नाम: सीएनसीआई द्वितीय परिसर, न्यू टाउन, कोलकाता में एंडो ब्रोन्कियल अल्ट्रासाउंड (ईबीयूएस) के साथ ब्रोंकोस्कोपी प्रणाली के उन्नयन के लिए हडको सीएसआर सहायता।

एजेंसी: चित्तरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (सीएनसीआई), कोलकाता।

स्वीकृत सीएसआर अनुदान सहायता: रु.100.00 लाख

सीएसआर अनुदान सहायता जारी: रु.99.99 लाख

उपयोगिता प्रमाणपत्र प्राप्त: रु.99.99 लाख

हडको ने सीएनसीआई (चित्तरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान) कोलकाता को 99.99 लाख रुपये की सीएसआर सहायता प्रदान की, जिससे ईबीयूएस (एंडोब्रोंकियल अल्ट्रासाउंड) प्रणाली की खरीद में सुविधा हुई। यह सहायता हडको की सामाजिक कल्याण, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। ईबीयूएस प्रणाली कैंसर रोगियों के लिए निदान और उपचार क्षमताओं को आगे बढ़ाने, अत्याधुनिक चिकित्सा प्रौद्योगिकियों तक उनकी पहुँच बढ़ाने में महत्वपूर्ण वादा करती है। इस तरह की पहल समुदायों की बेहतरी और स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में उन्नति को बढ़ावा देने में योगदान देती है, जिससे अंततः कोलकाता और उसके बाहर जरूरतमंद लोगों, खासकर कैंसर रोगियों को लाभ मिलता है। सीएनसीआई ने चिकित्सा उपकरण खरीदे हैं और तदनुसार, 99.99 लाख रुपये का यूसी जमा किया है।

सीएनसीआई (चितरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान) कोलकाता के चिकित्सा उपकरणों की तस्वीरें, जो ईबीयूएस (एंडोब्रोंकियल अल्ट्रासाउंड) प्रणाली की खरीद में सहायता कर रही हैं

योजना का नाम: सिक्किम में राहत, पुनर्वास और पुनर्निर्माण गतिविधियों सहित आपदा प्रबंधन के लिए सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, हडकोक, सिक्किम (एसएसडीएमए) को हडको सीएसआर सहायता/योगदान।

एजेंसी: सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, हडकोक, सिक्किम (एसएसडीएमए)

स्वीकृत सीएसआर अनुदान सहायता: रु.100.00 लाख

जारी सीएसआर अनुदान सहायता: रु.100.00 लाख

4 अक्टूबर 2023 की अचानक बाढ़ की घटना के रूप में आई आपदा के परिणामस्वरूप, तीस्ता बेसिन में बाढ़ आ गई, जिससे नदी के निचले हिस्से में स्थित बस्तियों को नुकसान पहुंचा। यह घटना राज्य और राष्ट्र के लिए एक आपदा थी, जिसके परिणामस्वरूप लोगों की मृत्यु हुई और संपत्तियों का नुकसान हुआ। सिक्किम राज्य सरकार और भारत सरकार द्वारा राहत के लिए तत्काल कार्रवाई शुरू की गई। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व क्षेत्र (सीएसआर) के तहत कई कंपनियां और संगठन सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसएसडीएमए) के माध्यम से संकटग्रस्त लोगों की मदद के लिए आगे आए। हडको ने उपरोक्त नेक उद्देश्य के लिए सीएसआर योगदान के लिए एसएसडीएमए को 100.00 लाख रुपये का योगदान दिया है।

सिक्किम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा हडको सीएसआर अनुदान सहायता के तहत प्राप्त निधि से राज्य में प्रभावित लोगों को वितरित की गई राहत सामग्री में भोजन, कपड़े, बर्तन, सैनिटरी आइटम, कंबल, गद्दे आदि शामिल थे। प्रभावित परिवारों द्वारा आधिकारिक विकेन्द्रीकृत वितरण के लिए राज्य के सभी स्थानों पर राहत सामग्री वितरित की गई। एसएसडीएमए ने 100.00 लाख रुपये की जारी की गई राशि के लिए यूसी के साथ-साथ स्वीकृति प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत किया है।

"देश तथा जाति का उपकार उसके बालक तभी कर सकते हैं, जब उन्हें उनकी भाषा द्वारा शिक्षा मिली हो।" - पं. गिरधर शर्मा

हडको सीएसआर सहायता से कोलकाता और आसपास के जिले के विभिन्न सरकारी स्कूलों में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 3 चरण यूवी निस्पंदन के साथ पीने के पानी के कूलर की स्थापना की झलकियाँ

बिधाननगर सरकारी हाई स्कूल, (साल्ट लेक), बीडी-303, सेक्टर-I, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता

भवतारिणी मंडल मेमोरियल इंग्लिश मीडियम इंटीग्रेटेड स्कूल, रवींद्र नगर, माटिकोल, कोलकाता

इंग्लिश मीडियम गवर्नमेंट इंटीग्रेटेड को-एड विद्यालय, बेहाला, कोलकाता

भवानीपुर मॉडर्न स्कूल, 8.बी, कुंडू रोड, कोलकाता

बैरकपुर सरकारी हाई स्कूल, तालपुकुर, उत्तर 24 परगना

बारासात पीसीएस सरकारी हाई स्कूल, बारासात

मल्टी-पर्पस सरकारी बालिका विद्यालय, कोलकाता

सखावत मेमोरियल गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल, कोलकाता

हेयर स्कूल, 87 कॉलेज स्ट्रीट, कोलकाता

हिंदू स्कूल, 1/बी, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता

बालीगंज सरकार. हाई स्कूल, कोलकाता

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख/कार्यकारी निदेशक जिन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

श्री वाई के गर्ग

श्री पी आर दास

श्री एम सी कुंडू

श्री मलय चटर्जी

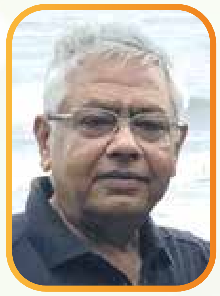
श्री आर के खन्ना

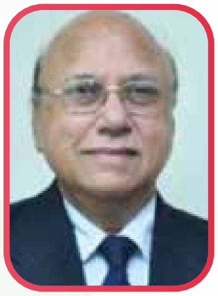
श्री एस सी शर्मा

श्री एस के चौधरी

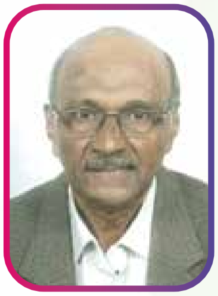
श्री एस रे

श्री पी के राजखोवा

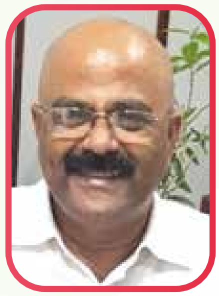
श्री राहुज जी श्रीवास्तव

डॉ. डी सुब्रहमणयम

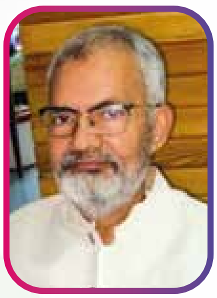
श्री अरुण कुमार

श्री एस साहा

श्री पी.आर. श्रीवास्तव

श्री एस.के. मिश्रा

डॉ. आलोक कुमार जोशी

डॉ. ए पी तिवारी

श्री देबेश चक्रबर्ती
वर्तमान क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

"यदि आप मुझे कुछ देना चाहती हों तो इस पाठशाला की शिक्षा का माध्यम हमारी मातृभाषा कर दें।" - एक फ्रांसीसी बालिका

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में इस वर्ष के दौरान, हमारे सेवानिवृत्त कर्मठ अधिकारीगण

श्री विक्टर भट्टाचार्जी
संयुक्त महाप्रबंधक (आईटी)

श्री तुषार कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक (आईटी)

श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य
सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में इस वर्ष के दौरान जन्मदिन मनाया गया

श्री वरुण कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)

श्री तुषार कुमार सिन्हा, उप महाप्रबंधक (आईटी)

श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, सहायक महाप्रबंधक (सचिवालय)

श्रीमती देबजानी मोहरार, वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

श्री शमीक बोस, संयुक्त महाप्रबंधक (अर्थ)

श्री विक्टर भट्टाचार्जी, संयुक्त महाप्रबंधक (आईटी)

श्री देबेश चक्रवर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

श्री जयंत भट्टाचार्य, वरिष्ठ प्रबंधक-आईटी

"हिंदुस्तान को छोड़कर दूसरे मध्य देशों में ऐसा कोई अन्य देश नहीं है, जहाँ कोई राष्ट्रभाषा नहीं हो।" - सैयद अमीर अली मीर

हडको दर्पण
HUDCO DARPAN

अंक 31 अप्रैल, 2024 | ISSUE 31 April, 2024

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

hudco.org.in | facebook.com/hudco | twitter.com/hudcolimited | linkedin.com/hudco-limited | youtube.com/@HUDCOLTD

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(नवरत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम)

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, हडको भवन, ब्लॉक-डीजे, प्लॉट नंबर 11, सेक्टर-II, करुणामयी,
साल्ट लेक, कोलकाता-700091, फ़ोन: (033) 2358 6141/7734/5514

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : nandlal@anjaniprakashan.com